आशीर्वचन



संस्कृत भाषा के अध्ययन के बिना भारत की संस्कृति, परम्परा, इतिहास एवं प्राचीन ज्ञान-विज्ञान को समझना सम्भव नहीं है। अत: भारतीय स्वाभिमान की भावना वाले प्रत्येक व्यक्ति को अपने प्राचीन अमूल्य ज्ञान-निधान को पाने के लिए संस्कृत भाषा का अभ्यास करना अनिवार्य है। इस भाषा के प्रौढ एवं व्यापक ज्ञान के लिए व्याकरण का अध्ययन भी आवश्यक है।

पतञ्जलि योगपीठ हरिद्वार में प्राचीन आर्ष परम्परा के अनुसार प्रामाणिक आचार्यों द्वारा पाणिनीय व्याकरण का अध्ययन-अध्यापन विगत लम्बे समय से करवाया जा रहा है। यहाँ व्याकरणज्ञान के लिए पाणिनीय शिक्षा के साथ अष्टाध्यायी, प्रथमावृत्ति, काशिकावृत्ति, धातुवृत्ति एवं महाभाष्य के अध्ययन की उत्तम व्यवस्था की गई है। आर्ष ग्रन्थों के अध्ययन से अल्प समय में सरलता पूर्वक उत्तम बोध होता है, जैसा कि महर्षि दयानन्द कहते हैं-

'महर्षि लोगों का आशय, जहाँ तक हो सके वहाँ तक सुगम और जिस के ग्रहण में समय थोड़ा लगे इस प्रकार का होता है और क्षुद्राशय लोगों की मनसा ऐसी होती है कि जहाँ तक बने वहाँ तक कठिन रचना करनी। जिसको बड़े परिश्रम से पढ़ के अल्प लाभ उठा सकें, जैसे पहाड़ का खोदना कौड़ी का लाभ होना और आर्ष ग्रन्थों का पढ़ना ऐसा है कि जैसा एक गोता लगाना बहुमूल्य मोतियों का पाना'।

व्याकरणाध्ययन की इस ऋषिनिर्दिष्ट प्राचीन सरणि के अनुसार पहले विद्यार्थियों को शिक्षा, अष्टाध्यायी एवं धातुपाठ आदि ग्रन्थों को कण्ठस्थ करवाया जाता है। छात्रों के उपयोगार्थ ग्रन्थों के उत्तम संस्करण भी पतञ्जलि योगपीठ द्वारा प्रकाशित किये जा रहे हैं। अष्टाध्यायी एवं धातुपाठ का प्रकाशन इसी शृंखला की कड़ी के रूप में किया गया है। मेरी शुभकामना है कि छात्रगण श्रद्धा से इन ग्रन्थों का अध्ययन कर प्रौढ वैदुष्य प्राप्त करें एवं प्राचीन भारतीय विद्याओं का संरक्षण व प्रचार-प्रसार सदा करते रहें।

शुभेच्छु
आचार्य बालकृष्ण

दिव्य प्रकाशन
पतंजलि योगपीठ
महर्षि दयानन्द ग्राम, दिल्ली-हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग,
निकट बहादराबाद, हरिद्वार-249405, उत्तराखण्ड, भारत
फोन : 01334.244107, 246737 फैक्स : 01334-24805,240664
ई-मेल : divyayoga@rediffmail.com, वेबसाइट : www.divyayoga.com

पाणिनिमुनि-प्रणीतः धातुपाठः

ओ३म्

पाणिनिमुनि-प्रणीतः

धातुपाठः



सम्पादकः
स्वामिरामदेवः

ओ३म्

पाणिनीयः

धातु-पाठः

सम्पादक–

स्वामी रामदेव

प्रकाशक–

दिव्य प्रकाशन

पतंजलि योगपीठ

हरिद्वार–249405 (उत्तराखण्ड)

धातु-पाठः

संस्करण : प्रथम संस्करण
कार्तिक मास, वि०सं०-२०७४ (दिसम्बर २०१७)
प्रतियाँ : २,०००

प्रकाशक : दिव्य प्रकाशन
पतंजलि योगपीठ
महर्षि दयानन्द ग्राम, दिल्ली-हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग-58,
निकट बहादराबाद, हरिद्वार-249402 (उत्तराखण्ड)
फोन : 01334-240008, 244107, 246737
फैक्स : 01334-244805, 240664
ईमेल : divyaprakashan@divyayoga.com
वैबसाइट : www.divyayoga.com

मूल्य : 80/- रुपये

प्राप्ति स्थान :
१. पतंजलि योगपीठ
महर्षि दयानन्द ग्राम, दिल्ली हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग-28,
निकट बहादराबाद, हरिद्वार-249405 (उत्तराखण्ड)

मुद्रक :
ऋषि ऑफसैट प्रिन्टर्स
अशोका टॉकीज़ के सामने, वेद मन्दिर,
दूरभाष : 9760284597, 9837120375
ईमेल : rishioffset@gmail.com

विषय-सूची-पत्र

★★★

भूमिका

संस्कृत भाषा विश्व की प्राचीनतम भाषा है। यह बहुत ही व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक भाषा है। इसका साहित्य सर्वाधिक समृद्ध और विविधतापूर्ण है। भाषा के विश्लेषण और शिष्ट-जुष्ट स्वरूप को सुरक्षित रखने के लिए व्याकरण की रचना की जाती है। संस्कृत भाषा के व्याकरण ग्रन्थों की रचना अति प्राचीन काल से प्रचलित है। आचार्य गण समय-समय पर व्याकरण शास्त्र का प्रवचन करते आये हैं। इनमें पाणिनि मुनि द्वारा विरचित व्याकरण ही वर्त्तमान काल में परिपूर्ण रूप में उपलब्ध है। यह सम्प्रति प्राप्त होने वाले सभी व्याकरणों में सर्वाधिक प्राचीन एवं सुव्यवस्थित है। यह व्याकरण कात्यायन मुनि द्वारा प्रणीत वार्त्तिकों से समुपबृंहित किया गया है। वार्त्तिकों को आधार बना कर ही पतञ्जलि मुनि ने महाभाष्य की रचना की थी, जिससे पाणिनीय व्याकरण विशेष रूप से विशद एवं गौरवान्वित हुआ है।

पाणिनिमुनि-प्रणीत इस व्याकरण के पाँच अङ्ग हैं- अष्टाध्यायी, धातुपाठ, गणपाठ, उणादिगण एवं लिङ्गानुशासन। इनमें अष्टाध्यायी मुख्य है और शेष चार ग्रन्थ उसके खिलभाग (परिशिष्ट अंश) हैं। इन पाँचों ग्रन्थों के अध्ययन से व्याकरण का ज्ञान परिपूर्ण होता है। विगत लम्बे समय से पतञ्जलि योगपीठ में अष्टाध्यायी-सूत्रक्रमानुसार प्राचीन आर्ष पद्धति से व्याकरण का अध्ययन-अध्यापन चल रहा है। इसके लिए मूल ग्रन्थों के शुद्ध संस्करण भी प्रकाशित किये जा रहे हैं। अष्टाध्यायी मूलपाठ के प्रकाशन के अनन्तर अब यह धातुपाठ का परिष्कृत संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है।

भाषा में धातुओं (क्रियाओं) एवं धातुज शब्दों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अतः भाषाज्ञान के लिए धातुपाठ का अध्ययन अति आवश्यक है। एक मत के अनुसार तो सभी शब्द धातुज माने जाते हैं, जैसा कि कहा है-

नाम च धातुजमाह निरुक्ते व्याकरणे शकटस्य च तोकम्।
यन्न पदार्थविशेषसमुत्थं प्रत्ययतः प्रकृतेश्च तदूह्यम्।।

अर्थात् निरुक्त में नामों को धातुज कहा है। प्राचीन काल के प्रसिद्ध वैयाकरण आचार्य शाकटायन भी ऐसा ही मानते हैं। अतः प्रकृति (धातु) एवं प्रत्यय के

संयोग से शब्दों की निष्पत्ति होती है। दधाति = धारयत्यर्थमिति धातुः। 'धा' धातोरौणादिकस्तुन् प्रत्ययः। इस प्रकार शब्दनिष्पत्ति में धातुओं का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है। धातुपाठ में दस गण हैं-

भ्वाद्यदादी जुहोत्यादिर्दिवादिः स्वादिरेव च।
तुदादिश्च रुधादिश्च तनादिक्रीचुरादयः।।

इन गणों के अन्त में कण्ड्वादि नामक लघु गण है, जिसका निर्देश अष्टाध्यायी में 'कण्ड्वादिभ्यो यक्' सूत्र द्वारा किया गया है। कण्ड्वादि गण में विद्यमान पदों को धातु एवं प्रातिपदिक- इन दोनों रूपों में माना जाता है। इस प्रकार धातुपाठगत धातुओं द्वारा विशाल वाङ्मय की शब्दराशि सिद्ध होती है।

ये धातुएँ सकर्मक तथा अकर्मक रूप में दो प्रकार की होती हैं-

फलव्यापारयोरेकनिष्ठतायामकर्मकः।
धातुस्तयोर्धर्मिभेदे सकर्मक उदाहृतः।।

अकर्मक धातुओं की पहचान के लिए निम्न पद्य स्मरणीय है-

लज्जासत्तास्थितिजागरणं वृद्धिक्षयभयजीवितमरणम्।
शयनक्रीडारुचिदीप्त्यर्थं धातुगणं तमकर्मकमाहुः।।

अर्थात् इस श्लोक में निर्दिष्ट अर्थ वाली धातुएँ अकर्मक होती हैं। धातुओं के परस्मैपद एवं आत्मनेपद में रूप बनते हैं। ये णिजन्त, सन्नन्त आदि प्रक्रियाओं में विभक्त हैं। माधवीया धातुवृत्ति, क्षीरतरङ्गिणी, धातुप्रदीप एवं आख्यातिक आदि ग्रन्थों द्वारा धातुओं के समस्त प्रक्रियागत रूपों का बोध होता है।

इस प्रकार व्याकरण के सर्वाङ्गीण बोध हेतु धातुपाठ का गहन अनुशीलन आवश्यक है। इसके लिए पहले मूल धातुपाठ को कण्ठस्थ करवाने की परम्परा रही है। एतदर्थ छात्रों के लिए धातुपाठ का शुद्ध संस्करण अपेक्षित है। इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए यह संस्करण प्रस्तुत किया जा रहा है। आशा है कि यह व्याकरण के अध्येताओं के लिए उपादेय सिद्ध होगा।

माघ बदि ४, २०७४ वि० — शुभेच्छु
(५ जनवरी २०१८ ई०) — स्वामी रामदेव

★ ओ३म् ★

अथ पाणिनिमुनिकृत-धातुपाठारम्भः

अथ भ्वादिर्गणः

अथैकः परस्मैभाषः

१ भू, सत्तायाम्।

उदात्तः परस्मैभाषः।।

तवर्गीयान्ताः

अथैधादयः कत्थ्यन्ताः

षट्त्रिंशदात्मनेभाषाः

२ एध, वृद्धौ।

३ स्पर्द्ध, सङ्घर्षे।

४ गाधृ, प्रतिष्ठालिप्सयोर्ग्रन्थे च।

५ बाधृ, विलोडने।

६ नाथृ, नाधृ, याच्ञोपतापैश्वर्य्याऽऽशीःषु।

७ दध, धारणे।

८ स्कुदि, आप्रवणे।

९ श्विदि, श्वैत्ये।

१० वदि, अभिवादनस्तुत्योः।

११ भदि, कल्याणे सुखे च।

१२ मदि, स्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु।

१३ स्पदि, किञ्चिच्चलने।

१४ क्लिदि, परिदेवने।

१५ मुद, हर्षे।

१६ दद, दाने।

१७ ष्वद, स्वर्द, आस्वादने।

१८ उर्द, माने क्रीडयाञ्च।

१९ कुर्द, खुर्द, गुर्द, गुद, क्रीडायामेव।

२० षूद, क्षरणे।

२१ ह्राद, अव्यक्ते शब्दे।

२२ ह्लादी, सुखे च।

२३ स्वाद, आस्वादने।

२४ पर्द, कुत्सिते शब्दे।

२५ यती, प्रयत्ने।

२६ युतृ, जुतृ, भासने।

२७ विथृ, वेथृ, याचने।

२८ श्रथि, शैथिल्ये।

२९ ग्रथि, कौटिल्ये।

३० कत्थ, श्लाघायाम्।

इत्युदात्ता अनुदात्तेतः।।

३६+१=३७

अथाऽतादयः शुन्ध्यन्ता
अष्टात्रिंशत्परस्मैभाषाः

३१ अत, सातत्यगमने।
३२ चिती, संज्ञाने।
३३ च्युतिर्, आसेचने।
३४ श्च्युतिर्, क्षरणे।
३५ मन्थ, विलोडने।
३६ कुथि, पुथि, लुथि, मथि, हिंसासंक्लेशनयोः।
३७ षिधु, गत्याम्।
३८ षिधू, शास्त्रे माङ्गल्ये च।
३९ खादृ, भक्षणे।
४० खद, स्थैर्ये हिंसायां च।
४१ बद, स्थैर्ये।
४२ गद, व्यक्तायां वाचि।
४३ रद, विलेखने।
४४ णद, अव्यक्ते शब्दे।
४५ अर्द, गतौ याचने च।
४६ नर्द, गर्द, शब्दे।
४७ तर्द, हिंसायाम्।
४८ कर्द, कुत्सिते शब्दे।
४९ खर्द, दन्दशूके।
५० अति, अदि, बन्धने।
५१ इदि, परमैश्वर्ये।
५२ बिदि, भिदि, अवयवे।
५३ गदि, वदनैकदेशे।
५४ णिदि, कुत्सायाम्।
५५ टुनदि, समृद्धौ।
५६ चदि, आह्लादने दीप्तौ च।
५७ त्रदि, चेष्टायाम्।
५८ कदि, क्रदि, क्लदि, आह्वाने रोदने च।
५९ क्लिदि, परिदेवने।
६० शुन्ध, शुद्धौ।

इत्युदात्ता उदात्तेतः।।

३८+३७=७५

कवर्गीयान्ताः

अथ शीक्यादयः श्लाघ्यन्ता
द्विचत्वारिंशदात्मनेभाषाः

६१ शीकृ, सेचने।
६२ लोकृ, दर्शने।
६३ श्लोकृ, संघाते।
६४ द्रेकृ, ध्रेकृ, शब्दोत्साहयोः।
६५ रेकृ, शङ्कायाम्।
६६ सेकृ, स्रेकृ, स्रकि, श्रकि, श्लकि, गत्यर्थाः।
६७ शकि, शङ्कायाम्।
६८ अकि, लक्षणे।
६९ वकि, कौटिल्ये।
७० मकि, मण्डने।
७१ कक, लौल्ये।
७२ कुक, वृक, आदाने।

७३ चक, तृप्तौ प्रतिघाते च।
७४ ककि, वकि, श्वकि, त्रकि,
ढौकृ, त्रौकृ, ष्वष्क, वस्क,
मस्क, टिकृ, टीकृ, तिकृ,
तीकृ, रघि, लघि, गत्यर्थाः।
७५ लघि, भोजननिवृत्तावपि।
७६ अघि, वघि, मघि, गत्याक्षेपे।
७७ मघि, कैतवे च।
७८ राघृ, लाघृ, द्राघृ, ध्राघृ,
सामर्थ्ये।
७९ द्राघृ, आयामे च।
८० श्लाघृ, कत्थने।
इत्युदात्ता अनुदात्तेतः।।
४२+७५=११७

अथ फक्कादयः शिघ्यन्ताः
एकपञ्चाशत् परस्मैभाषाः

८१ फक्क, नीचैर्गतौ।
८२ तक, हसने।
८३ तकि, कृच्छ्रजीवने।
८४ बुक्क, भषणे।
८५ कख, हसने।
८६ ओखृ, राखृ, लाखृ, द्राखृ,
ध्राखृ, शोषणाऽलमर्थयोः।
८७ शाखृ, श्लाखृ, व्याप्तौ।
८८ उख, उखि, वख, वखि,
मख, मखि, णख, णखि,
रख, रखि, लख, लखि,
इख, इखि, ईखि, वल्गु, रगि,
लगि, अगि, वगि, मगि,
तगि, त्वगि, श्रगि, श्लगि,
इगि, रिगि, लिगि, गत्यर्थाः।
८९ रिख, त्रख, त्रखि, शिखि,
इत्यपि केचित्।
९० त्वगि, कम्पने च।
९१ युगि, जुगि, बुगि, वर्जने।
९२ घघ, हसने।
९३ मघि, मण्डने।
९४ लघि, शोषणे।
९५ शिघि, आघ्राणे।
इत्युदात्ता उदात्तेतः।।
५१+११७=१६८

चवर्गीयान्ताः

अथ वर्चादय ईज्यन्ता
एकविंशतिरात्मनेभाषाः

९६ वर्च, दीप्तौ।
९७ षच, सेचने सेवने च।
९८ लोचृ, दर्शने।
९९ शच, व्यक्तायां वाचि।
१०० श्वच, श्वचि, गतौ।
१०१ कच, बन्धने।

१०२ कचि, काचि, दीप्तिबन्ध-
नयोः।
१०३ मच, मुचि, कल्कने।
१०४ मचि, धारणोच्छ्रायपूजनेषु।
१०५ पचि, व्यक्तीकरणे।
१०६ ष्टुच, प्रसादे।
१०७ ऋज, गतिस्थानार्जनोपार्ज-
नेषु।
१०८ ऋजि, भृजी, भर्जने।
१०९ एजृ, भ्रेजृ, भ्राजृ, दीप्तौ।
११० ईज, गतिकुत्सनयोः।
इत्युदात्ता अनुदात्तेतः।।
२१+१६८=१८९

अथ शुचादयो व्रज्यन्ता द्विसप्ततिः परस्मैभाषाः

१११ शुच, शोके।
११२ कुच, शब्दे तारे।
११३ कुञ्च, क्रुञ्च, गतिकौटि-
ल्याल्पीभावयोः।
११४ लुञ्च, अपनयने।
११५ अञ्चु, गतिपूजनयोः।
११६ वञ्चु, चञ्चु, तञ्चु, त्वञ्चु,
म्रुञ्चु, म्लुञ्चु, म्रुचु, म्लुचु,
गत्यर्थाः।
११७ ग्रुचु, ग्लुचु, कुजु, खुजु,
स्तेयकरणे।
११८ ग्लुञ्चु, षस्ज, गतौ।
११९ गुज, गुजि, अव्यक्ते शब्दे।
१२० अर्च, पूजायाम्।
१२१ म्लेछ, अव्यक्ते शब्दे।
१२२ लछ, लाछि, लक्षणे।
१२३ वाछि, इच्छायाम्।
१२४ आछि, आयामे।
१२५ ह्रीछ, लज्जायाम्।
१२६ हुर्छा, कौटिल्ये।
१२७ मुर्छा, मोहसमुच्छ्राययोः।
१२८ स्फुर्छा, विस्तृतौ।
१२९ युछ, प्रमादे।
१३० उछि, उञ्छे।
१३१ उछी, विवासे।
१३२ ध्रज, ध्रजि, धृज, धृजि,
ध्वज, ध्वजि, गतौ।
१३३ कूज, अव्यक्ते शब्दे।
१३४ अर्ज, षर्ज, अर्जने।
१३५ गर्ज, शब्दे।
१३६ तर्ज, भर्त्सने।
१३७ कर्ज, व्यथने।
१३८ खर्ज, पूजने च ।
१३९ अज, गतिक्षेपणयोः।
१४० तेज, पालने।
१४१ खज, मन्थे।
१४२ खजि, गतिवैकल्ये।
१४३ एजृ, कम्पने।

१४४ टुओस्फूर्जा, वज्रनिर्घोषे।
१४५ क्षि, क्षये।
१४६ क्षीज, अव्यक्ते शब्दे।
१४७ लज, लजि, भर्जने।
१४८ लाज, लाजि, भर्त्सने च।
१४९ जज, जजि, युद्धे।
१५० तुज, हिंसायाम्।
१५१ तुजि, पालने च।
१५२ गज, गजि, गृज, गृजि, मुज, मुजि, शब्दार्थाः।
१५३ गज, मदे च।
१५४ वज, व्रज, गतौ।

इति क्षिवर्जमुदात्ता उदात्तेतः।।

७२+१८९=२६१

टवर्गीयान्ताः

अथाऽट्टादयः शाड्यन्ताः षट्त्रिंशदात्मनेभाषाः

१५५ अट्ट, अतिक्रमणहिंसनयोः।
१५६ वेष्ट, वेष्टने।
१५७ चेष्ट, चेष्टायाम्।
१५८ गोष्ट, लोष्ट, संघाते।
१५९ घट्ट, चलने।
१६० स्फुट, विकसने।
१६१ अठि, गतौ।
१६२ वठि, एकचर्यायाम्।
१६३ मठि, कठि, शोके।
१६४ मुठि, पालने।
१६५ हेठ, विबाधायाम्।
१६६ एठ, च।
१६७ हिडि, गत्यनादरयोः।
१६८ हुडि, संघाते।
१६९ कुडि, दाहे।
१७० वडि, विभाजने।
१७१ मडि च।
१७२ भडि, परिभाषणे।
१७३ पिडि, संघाते।
१७४ मुडि, मार्जने।
१७५ तुडि, तोडने।
१७६ हुडि, वरणे।
१७७ चडि कोपे।
१७८ शडि, रुजायां संघाते च।
१७९ तडि, ताडने।
१८० पडि, गतौ।
१८१ कडि, मदे।
१८२ खडि, मन्थे।
१८३ हेडृ, होडृ, अनादरे।
१८४ वाडृ, आप्लाव्ये।
१८५ द्राडृ, ध्राडृ, विशरणे।
१८६ शाडृ, श्लाघायाम्।

इत्युदात्ता अनुदात्तेतः।

३६+२६१=२९७

अथ शौट्‌यादयो गड्यन्ता द्वासप्ततिः परस्मैभाषाः

१८७ शौटृ, गर्वे।
१८८ यौटृ, बन्धने।
१८९ म्लेटृ, म्रेडृ, उन्मादे।
१९० कटे, वर्षावरणयोः।
१९१ चटे, इत्येके।
१९२ अट, पट, गतौ।
१९३ रट, परिभाषणे।
१९४ लट, बाल्ये।
१९५ शट, रुजाविशरणगत्यवसा-दनेषु।
१९६ वट, वेष्टने।
१९७ किट, खिट, त्रासे।
१९८ शिट, षिट, अनादरे।
१९९ जट, झट, संघाते।
२०० भट, भृतौ।
२०१ तट, उच्छ्राये।
२०२ खट, काङ्क्षायाम्।
२०३ णट, नृतौ।
२०४ पिट, शब्दसंघातयोः।
२०५ हट, दीप्तौ च।
२०६ षट, अवयवे।
२०७ लुट, विलोडने।
२०८ चिट, परप्रैष्ये।
२०९ विट, शब्दे।
२१० बिट, आक्रोशे।
२११ हिट, इत्येके।
२१२ इट, किट, कटी, गतौ।
२१३ मडि, भूषायाम्।
२१४ कुडि, वैकल्ये।
२१५ मुट, पुट, मर्दने।
२१६ चुडि, अल्पीभावे।
२१७ मुडि, खण्डने।
२१८ पुडि, चेत्येके।
२१९ रुटि, लुटि, स्तेये।
२२० रुठि, लुठि, इत्येके।
२२१ स्फुटिर्, विशरणे।
२२२ पठ, व्यक्तायां वाचि।
२२३ वठ, स्थौल्ये।
२२४ मठ, मदनिवासयोः।
२२५ कठ, कृच्छ्रजीवने।
२२६ रठ, परिभाषणे।
२२७ हठ, प्लुतिशठत्वयोः। बलात्कार इत्येके।
२२८ रुठ, लुठ, उठ, उपघाते।
२२९ ऊठ, इत्येके।
२३० पिठ, हिंसासंक्लेशनयोः।
२३१ शठ, कैतवे च।
२३२ शुठ, प्रतिघाते।
२३३ शुठि, इत्येके।
२३४ कुठि, च।
२३५ लुठि, आलस्ये प्रतिघाते च।
२३६ शुठि, शोषणे।

२३७ रुठि, लुठि, गतौ।
२३८ चुड्ड, भावकरणे।
२३९ अड्ड, अभियोगे।
२४० कड्ड, कार्कश्ये।
२४१ क्रीड़ृ, विहारे।
२४२ तुड़ृ, तोडने।
२४३ तूड़ृ, इत्येके।
२४४ हुड़ृ, हूड़ृ, होड़ृ, गतौ।
२४५ रौड़ृ, अनादरे।
२४६ रोड़ृ, लोड़ृ, उन्मादे।
२४७ अड, उद्यमने।
२४८ लड, विलासे।
२४९ कड, मदे।
२५० कडि, इत्येके।
२५१ गडि, वदनैकदेशे।

इत्युदात्ता उदात्तेतः।।

७२+२९७=३६९

पवर्गीयान्ताः

अथ तिप्यादयः ष्टुभ्यन्तास्त्रयस्त्रिंशदात्मनेभाषाः

२५२ तिपृ, तेपृ, ष्टिपृ, ष्टेपृ, क्षरणार्थाः।
२५३ थिपृ, थेपृ, इत्यन्ये।
२५४ तेपृ, कम्पने च।
२५५ ग्लेपृ, दैन्ये।
२५६ टुवेपृ, कम्पने।
२५७ केपृ, गेपृ, ग्लेपृ च।
२५८ मेपृ, रेपृ, लेपृ, गतौ।
२५९ हेपृ, धेपृ च।
२६० त्रपूष्, लज्जायाम्।
२६१ कपि, चलने।
२६२ रबि, लबि, अबि, शब्दे।
२६३ लबि, अवस्रंसने च।
२६४ कबृ, वर्णे।
२६५ क्लीबृ, अधार्ष्ट्ये।
२६६ क्षीबृ, मदे।
२६७ शीभृ, कत्थने।
२६८ चीभृ, च।
२६९ रेभृ, शब्दे।
२७० अभि, रभि, इत्येके।
२७१ ष्टभि, स्कभि, प्रतिबन्धे।
२७२ जभी, जृभि, गात्रविनामे।
२७३ शल्भ, कत्थने।
२७४ वल्भ, भोजने।
२७५ गल्भ, धार्ष्ट्ये।
२७६ स्रम्भु, प्रमादे।
२७७ श्रम्भु, इत्येके।
२७८ ष्टुभ स्तम्भे।

इति तिपिवर्जमुदात्ता अनुदात्तेतः।।

३३+३६९=४०२

अथ गुपादयः शुम्भ्यन्ता
एकोनचत्वारिंशत् परस्मैभाषाः

२७९ गुपू, रक्षणे।
२८० धूप, सन्तापे।
२८१ जप, जल्प, व्यक्तायां वाचि।
२८२ जप, मानसे च।
२८३ चप, सान्त्वने।
२८४ षप, समवाये।
२८५ रप, लप, व्यक्तायां वाचि।
२८६ चुप, मन्दायां गतौ।
२८७ तुप, तुम्प, त्रुप, त्रुम्प,
तुफ, तुम्फ, त्रुफ, त्रुम्फ,
हिंसार्थाः।
२८८ पर्प, रफ, रफि, अर्ब, पर्ब,
लर्ब, बर्ब, मर्ब, कर्ब, खर्ब,
गर्ब, शर्ब, षर्ब, चर्ब, गतौ।
२८९ चर्ब, अदने च।
२९० कुबि, आच्छादने।
२९१ लुबि, तुबि, अर्दने।
२९२ चुबि, वक्त्रसंयोगे।
२९३ षृभु, षृम्भु, हिंसार्थौ।
२९४ षिभु, षिम्भु, इत्येके।
२९५ शुभ, शुम्भ, भाषणे।
हिंसायामित्यन्ये।
इत्युदात्ता उदात्तेतः।।

३९+४०२=४४१

अनुनासिकान्ताः

अथ घिण्यादयो दशात्मनेभाषाः

२९६ घिणि, घुणि, घृणि, ग्रहणे।
२९७ घुण, घूर्ण, भ्रमणे।
२९८ पण, व्यवहारे स्तुतौ च।
२९९ पन, च।
३०० भाम, क्रोधे।
३०१ क्षमूष्, सहने।
३०२ कमु, कान्तौ।
इत्युदात्ता अनुदात्तेतः।।

१०+४४१=४५१

अथाऽणादयः क्रम्यन्तास्त्रिंशत्
परस्मैभाषाः

३०३ अण, रण, वण, भण, मण,
कण, क्वण, व्रण, भ्रण,
ध्वण, शब्दार्थाः।
३०४ धण, इत्येके।
३०५ ओणृ, अपनयने।
३०६ शोणृ, वर्णगत्योः।
३०७ श्रोणृ, संघाते।
३०८ श्लोणृ, च।
३०९ पैणृ, गतिप्रेरणश्लेषणेषु।
३१० ध्रण, बण, शब्दे।
३११ कनी, दीप्तिकान्तिगतिषु।

३१२ ष्टन, वन, शब्दे।
३१३ वन, षण, संभक्तौ।
३१४ अम, गत्यादिषु।
३१५ द्रम, हम्म, मीमृ, गतौ।
३१६ मीमृ, शब्दे च।
३१७ चमु, छमु, जमु, झमु, अदने।
३१८ जिमु, इत्येके।
३१९ क्रमु, पादविक्षेपे।
इत्युदात्ता उदात्तेत:।

३०+४५१=४८१

अथान्तस्थान्ता:

अथायादयो रेवत्यन्ता:

सप्तत्रिंशदात्मनेभाषा:

३२० अय, वय, पय, मय, चय, तय, णय, गतौ।
३२१ णय, रक्षणे च।
३२२ दय, दानगतिरक्षणहिंसा-दानेषु।
३२३ रय, गतौ।
३२४ ऊयी, तन्तुसन्ताने।
३२५ पूयी, विशरणे दुर्गन्धे च।
३२६ क्नूयी, शब्दे उन्दे च।
३२७ क्ष्मायी, विधूनने।
३२८ स्फायी, ओप्यायी, वृद्धौ।
३२९ तायृ, सन्तानपालनयो:।
३३० शल, चलनसंवरणयो:।
३३१ वल, वल्ल, संवरणे सञ्चलने च।
३३२ मल, मल्ल, धारणे।
३३३ भल, भल्ल, परिभाषण-हिंसादानेषु।
३३४ कल, शब्दसंख्यानयो:।
३३५ कल्ल, अव्यक्ते शब्दे।
३३६ तेवृ, देवृ, देवने।
३३७ षेवृ, गेवृ, ग्लेवृ, पेवृ, मेवृ, म्लेवृ, सेवने।
३३८ शेवृ, खेवृ, केवृ, इत्यप्येके।
३३९ रेवृ, प्लवगतौ।
इत्युदात्ता अनुदात्तेत:।।

३७+४८१=५१८

अथ मव्यादयोऽवत्यन्ता:

पञ्चनवति: परस्मैभाषा:

३४० मव्य, बन्धने।
३४१ सूर्क्ष्य, ईर्क्ष्य, ईर्ष्य, ईर्ष्यार्था:।
३४२ हय, गतौ।
३४३ शुच्य, चुच्य, अभिषवे।
३४४ हर्य्य, गतिकान्त्यो:।
३४५ अल, भूषणपर्याप्तिवारणेषु।

३४६ ञिफला, विशरणे।
३४७ मील, श्मील, स्मील, क्ष्मील, निमेषणे।
३४८ पील, प्रतिष्टम्भे।
३४९ णील, वर्णे।
३५० शील, समाधौ।
३५१ कील, बन्धने।
३५२ कूल, आवरणे।
३५३ शूल, रुजायां संघाते च।
३५४ तूल, निष्कर्षे।
३५५ पूल, संघाते।
३५६ मूल, प्रतिष्ठायाम्।
३५७ फल, निष्पत्तौ।
३५८ चुल्ल, भावकरणे।
३५९ फुल्ल, विकसने।
३६० चिल्ल, शैथिल्ये भावकरणे च।
३६१ तिल, गतौ।
३६२ तिल्ल, इत्यन्ये।
३६३ वेलृ, चेलृ, केलृ, खेलृ, क्ष्वेलृ, वेल्ल, चलने।
३६४ पेलृ, फेलृ, खेलृ, शेलृ, षेलृ, गतौ।
३६५ स्खल, संचलने।
३६६ खल, संचये च।
३६७ गल, अदने।
३६८ षल, गतौ।
३६९ दल, विशरणे।
३७० श्वल, श्वल्ल, आशुगमने।
३७१ खोलृ, खोर्ऋ, गतिप्रतिघाते।
३७२ धोर्ऋ, गतिचातुर्ये।
३७३ त्सर, छद्मगतौ।
३७४ क्मर, हूर्छने।
३७५ अभ्र, वभ्र, मभ्र, चर, गत्यर्थाः।
३७६ चर, भक्षणे च।
३७७ ष्ठिवु, निरसने।
३७८ जि, जये।
३७९ जीव, प्राणधारणे।
३८० पीव, मीव, तीव, णीव, स्थौल्ये।
३८१ क्षीवु, क्षेवु, निरसने।
३८२ उर्वी, तुर्वी, थुर्वी, दुर्वी, धुर्वी, हिंसार्थाः।
३८३ गुर्वी, उद्यमने।
३८४ मुर्वी, बन्धने।
३८५ पुर्व, पर्व, मर्व, पूरणे।
३८६ चर्व, अदने।
३८७ भर्व, हिंसायाम्।
३८८ कर्व, खर्व, गर्व, दर्पे।
३८९ अर्व, शर्व, षर्व, हिंसायाम्।
३९० इवि, व्याप्तौ।
३९१ पिवि, मिवि, णिवि, सेवने।

सेचने, चेत्येके।
३९२ हिवि, दिवि, धिवि, जिवि, प्रीणनार्थाः।
३९३ रिवि, रवि, धवि, गत्यर्थाः।
३९४ कृवि, हिंसाकरणयोश्च।
३९५ मव, बन्धने।
३९६ अव, रक्षणगतिकान्तिप्रीतितृप्त्यवगमप्रवेशश्रवणस्वाम्यर्थयाचनक्रियेच्छादीप्त्यवाप्त्यालिङ्गनहिंसादानभागवृद्धिषु।

इति जयतिवर्जमुदात्ता उदात्तेतः।

९५+५१८=६१३

अथैक उभयतोभाषः

३९७ धावु, गतिशुद्ध्योः।

उदात्तः स्वरितेदुभयतोभाषः।

१+६१३=६१४

ऊष्मान्ताः

अथ धुक्षादयो घुष्यन्ता एकपञ्चाशदात्मनेभाषाः

३९८ धुक्ष, धिक्ष, सन्दीपनक्लेशनजीवनेषु।
३९९ वृक्ष, वरणे।
४०० शिक्ष, विद्योपादाने।
४०१ भिक्ष, भिक्षायामलाभे लाभे च।
४०२ क्लेश, अव्यक्तायां वाचि। बाधने इत्यन्ये।
४०३ दक्ष, वृद्धौ शीघ्रार्थे च।
४०४ दीक्ष, मौण्ड्येज्योपनयननियमव्रतादेशेषु।
४०५ ईक्ष, दर्शने।
४०६ ईष, गतिहिंसादर्शनेषु।
४०७ भाष, व्यक्तायां वाचि।
४०८ वर्ष, स्नेहने।
४०९ गेषृ, अन्विच्छायाम्।
४१० ग्लेषृ, इत्येके।
४११ येषृ, प्रयत्ने।
४१२ जेषृ, णेषृ, एषृ, प्रेषृ, गतौ।
४१३ रेषृ, हेषृ, ह्रेषृ, अव्यक्ते शब्दे।
४१४ कासृ, शब्दकुत्सायाम्।
४१५ भासृ, दीप्तौ।
४१६ णासृ, रासृ, शब्दे।
४१७ णस, कौटिल्ये।
४१८ भ्यस, भये।
४१९ आङः शसि, इच्छायाम्।
४२० ग्रसु, ग्लसु, अदने।
४२१ ईह, चेष्टायाम्।
४२२ बहि, महि, वृद्धौ।

४२३ अहि, गतौ।
४२४ गर्ह, गल्ह, कुत्सायाम्।
४२५ बर्ह, बल्ह, प्राधान्ये।
४२६ वर्ह, वल्ह, परिभाषण-
हिंसाऽऽच्छादनेषु।
४२७ प्लिह, गतौ।
४२८ वेहृ, जेहृ, बाहृ, प्रयत्ने।
४२९ द्राहृ, निद्राक्षये। निक्षेप
इत्येके।
४३० काशृ, दीप्तौ।
४३१ ऊह, वितर्के।
४३२ गाहू, विलोडने।
४३३ गृहू, ग्रहणे।
४३४ ग्लह, च।
४३५ घुषि, कान्तिकरणे।
इत्युदात्ता अनुदात्तेतः।।
५१+६१४=६६५

अथ घुषिरादयोऽर्हत्यन्ता
अष्टाशीतिः परस्मैभाषाः

४३६ घुषिर्, अविशब्दने।
४३७ अक्षू, व्याप्तौ।
४३८ तक्षू, त्वक्षू, तनूकरणे।
४३९ उक्ष, सेचने।
४४० रक्ष, पालने।
४४१ णिक्ष, चुम्बने।
४४२ तृक्ष, ष्टृक्ष, णक्ष, गतौ।
४४३ वक्ष, रोषे। संघात इत्येके।
४४४ मृक्ष, संघाते।
४४५ म्रक्ष, इत्येके।
४४६ तक्ष, त्वचने।
४४७ पक्ष, परिग्रह इत्येके।
४४८ सूर्क्ष, आदरे।
४४९ काक्षि, वाक्षि, माक्षि,
काङ्क्षायाम्।
४५० द्राक्षि, ध्राक्षि, ध्वाक्षि,
घोरवासिते।
४५१ चूष, पाने।
४५२ तूष, तुष्टौ।
४५३ पूष, वृद्धौ।
४५४ मूष, स्तेये।
४५५ लूष, रूष, भूषायाम्।
४५६ शूष, प्रसवे।
४५७ यूष, हिंसायाम्।
४५८ जूष, च।
४५९ भूष अलंकारे।
४६० ऊष, रुजायाम्।
४६१ ईष, उञ्छे।
४६२ कष, खष, शिष, जष, झष,
शष, वष, मष, रुष, रिष,
हिंसार्थाः।
४६३ भष, भर्त्सने।
४६४ उष, दाहे।

४६५ जिषु, विषु, मिषु, सेचने।
४६६ पुष, पुष्टौ।
४६७ श्रिषु, श्लिषु, प्रषु, प्लुषु, दाहे।
४६८ पृषु, वृषु, मृषु, सेचने।
४६९ मृषु, सहने च। इतरौ हिंसा-संक्लेशनयोश्च।
४७० घृषु, संघर्षे।
४७१ हृषु, अलीके।
४७२ तुस, ह्रस, ह्लस, रस, शब्दे।
४७३ लस, श्लेषणक्रीडनयोः।
४७४ घस्लृ, अदने।
४७५ जर्ज, चर्च, झर्झ, परिभाषण-हिंसातर्जनेषु।
४७६ पिसृ, पेसृ, गतौ।
४७७ हसे, हसने।
४७८ णिश, समाधौ।
४७९ मिश, मश, शब्दे रोषकृते च।
४८० शव, गतौ।
४८१ शश, प्लुतगतौ।
४८२ शसु, हिंसायाम्।
४८३ शंसु, स्तुतौ।
४८४ चह, परिकल्कने।
४८५ मह, पूजायाम्।
४८६ रह, त्यागे।
४८७ रहि, गतौ।
४८८ दृह, दृहि, बृह, बृहि, वृद्धौ।
४८९ बृहि, शब्दे च।
४९० बृहिर्, इत्येके।
४९१ तुहिर्, दुहिर्, उहिर्, अर्दने।
४९२ अर्ह, पूजायाम्।
इत्युदात्ता उदात्तेतः।।

८८+६६५=७५३

अथ द्युतादयः कृपूपर्यन्ताः पञ्चविंशतिरात्मनेभाषाः

४९३ द्युत, दीप्तौ।
४९४ श्विता, वर्णे।
४९५ ञिमिदा, स्नेहने।
४९६ ञिष्विदा, स्नेहनमोचनयोः।
४९७ ञिक्ष्विदा इत्येके।
४९८ रुच, दीप्तावभिप्रीतौ च।
४९९ घुट, परिवर्त्तने।
५०० रुट, लुट, लुड, उठ, उपघाते।
५०१ शुभ, दीप्तौ।
५०२ क्षुभ, संचलने।
५०३ णभ, तुभ, हिंसायाम्।
५०४ स्रंसु, ध्वंसु, भ्रंसु, अवस्रंसने।
५०५ ध्वंसु गतौ च।
५०६ भ्रशु, भ्रंशु, अधःपतने।

५०७ स्रम्भु, विश्वासे।
५०८ वृतु, वर्त्तने।
५०९ वृधु, वृद्धौ।
५१० शृधु, शब्दकुत्सायाम्।
५११ स्यन्दू, प्रस्रवणे।
५१२ कृपू, सामर्थ्ये।
५१३ वृत्[१]।

इत्युदात्ता अनुदात्तेत:।।

२५+७५३=७७८

अथ घटादयस्त्वरत्यन्तास्त्रयो-दशात्मनेभाषा:

५१४ घट, चेष्टायाम्।
५१५ व्यथ, भयसंचलनयो:।
५१६ प्रथ, प्रख्याने।
५१७ प्रस, विस्तारे।
५१८ म्रद मर्दने।
५१९ स्खद, स्खदने।
५२० क्षजि, गतिदानयो:।
५२१ दक्ष, गतिहिंसनयो:।
५२२ क्रप, कृपायां गतौ च।
५२३ कदि, क्रदि, क्लदि।
वैक्लव्ये। वैकल्य इत्येके।
५२४ कद, क्रद, क्लद, इत्यन्ये।
५२५ ञित्वरा, संभ्रमे।[२]

इत्युदात्ता अनुदात्तेत:।।

१३+७७८=७९१

अथ ज्वरादय: फणाऽन्ता एकपञ्चाशत् परस्मैभाषा:

५२६ ज्वर, रोगे।
५२७ गड, सेचने।
५२८ हेड, वेष्टने।
५२९ वट, भट, परिभाषणे।
५३० णट, नृतौ।
५३१ ष्टक, प्रतिघाते।
५३२ चक, तृप्तौ।
५३३ कखे, हसने।
५३४ रगे, शङ्कायाम्।
५३५ लगे, सङ्गे।
५३६ ह्वगे, ह्लगे, षगे, ष्टगे संवरणे।
५३७ कगे, नोच्यते।
५३८ अक, अग, कुटिलायां गतौ।
५३९ कण, रण, गतौ।
५४० चण, शण, श्रण, दाने च।

---

१. द्युतादिर्गणो वृतादिर्गणश्च समाप्त इत्यर्थ:।

२. इतोऽग्रे 'घटादय: षित:' इति सूत्रमधिकं माधवीयधातुवृतौ।

५४१ शण, गतावित्यन्ये।
५४२ श्रथ, श्लथ, क्रथ, क्लथ, हिंसार्थाः।
५४३ चन, च।
५४४ वनु, च नोच्यते।
५४५ ज्वल, दीप्तौ।
५४६ ह्वल, ह्मल, संचलने।
५४७ स्मृ, आध्याने।
५४८ दॄ, भये।
५४९ नॄ,नये।
५५० श्रा, पाके।
५५१ मारणतोषणनिशामनेषु ज्ञा।
५५२ कम्पने, चलिः।
५५३ छदिर्, ऊर्जने।
५५४ जिह्वोन्मथने लडिः।
५५५ मदी, हर्षग्लेपनयोः।
५५६ ध्वन, शब्दे।
५५७ दलि, वलि, स्खलि, रणि, ध्वनि, त्रपि, क्षपयश्चेत्यन्ये।
५५८ स्वन, अवतंसने।
५५९ घटादयो मितः।
५६० जनीजॄष्क्नसुरञ्जोऽमन्ताश्च।
५६१ ज्वलह्वलह्मलनमामनुपसर्गाद्वा।
५६२ ग्लास्नावनुवमां च।
५६३ न कम्यमिचमाम्।
५६४ शमोऽदर्शने।
५६५ यमोऽपरिवेषणे।
५६६ स्खदिरवपरिभ्यां च।
५६७ फण, गतौ।
५६८ वृत्[1]।

इत्युदात्ता उदात्तेतः।।

५१+७९१=८४२

अथैक उभयतोभाषः

५६९ राजृ, दीप्तौ।

उदात्तः स्वरितेत्।।

१+८४२=८४३

अथ त्रय आत्मनेभाषाः

५७० टुभ्राजृ, टुभ्राशृ, टुभ्लाशृ, दीप्तौ।।

इत्युदात्ता अनुदात्तेतः।।

३+८४३=८४६

अथ स्यमादयः क्षरत्यन्ताः षड्विंशतिः परस्मैभाषाः

५७१ स्यमु, स्वन, ध्वन, शब्दे।

---

१. घटादिर्गणः समाप्त इत्यर्थः।

५७२ षम, ष्टम, अवैक्लव्ये।
५७३ ज्वल, दीप्तौ।
५७४ चल, कम्पने।
५७५ जल, घातने।
५७६ टल, ट्वल, वैक्लव्ये।
५७७ ष्ठल, स्थाने।
५७८ हल, विलेखने।
५७९ णल, गन्धे। बन्धन इत्येके।
५८० पल, गतौ।
५८१ बल, प्राणने धान्यावरोधे च।
५८२ पुल, महत्त्वे।
५८३ कुल, संस्त्याने बन्धुषु च।
५८४ शल, हुल, पत्लृ, गतौ।
५८५ क्वथे, निष्पाके।
५८६ पथे, गतौ।
५८७ मथे, विलोडने।
५८८ टुवम, उद्गिरणे।
५८९ भ्रमु, चलने।
५९० क्षर, संचलने।
इत्युदात्ता उदात्तेतः।।
२६+८४६=८७२

अथ द्वावात्मनेभाषौ

५९१ षह, मर्षणे।
उदात्तोऽनुदात्तेत्।।

५९२ रमु, क्रीडायाम्।
अनुदात्तोऽनुदात्तेत्।।
२+८७२=८७४

अथ षदादयः कसन्ताः
सप्त परस्मैभाषाः

५९३ षद्लृ, विशरणगत्यवसादनेषु।
५९४ शद्लृ, शातने।
५९५ क्रुश, आह्वाने रोदने च।
इत्यनुदात्ता उदात्तेतः।।
५९६ कुच, संपर्चनकौटिल्यप्रतिष्टम्भविलेखनेषु।
५९७ बुध, अवगमने।
५९८ रुह, बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च।
५९९ कस, गतौ।
६०० वृत्[१]।
इत्युदात्ता उदात्तेतः,
रुहिस्त्वनुदात्तः।।
७+८७४=८८१

अथ हिक्कादयो गुहत्यन्ता
अष्टात्रिंशदुभयतोभाषाः

६०१ हिक्क, अव्यक्ते शब्दे।

---

१. ज्वलादिर्गणः समाप्त इत्यर्थः।

६०२ अञ्चु, गतौ याचने च।
६०३ अचु, इत्येके।
६०४ अचि, इत्यपरे।
६०५ टुयाचृ, याच्ञायाम्।
६०६ रेटृ, परिभाषणे।
६०७ चते, चदे, याचने।
६०८ प्रोथृ, पर्याप्तौ।
६०९ मिदृ, मेदृ, मेधाहिंसनयोः।
६१० मिथृ, मेथृ, इत्येके।
६११ मिधृ, मेधृ, संगमे च।
६१२ णिदृ, णेदृ, कुत्सासन्नि-
कर्षयोः।
६१३ शृधु, मृधु, उन्दने।
६१४ बुधिर्, बोधने।
६१५ उबुन्दिर्, निशामने।
६१६ वेणृ, गतिज्ञानचिन्ता-
निशामनवादित्रग्रहणेषु।
६१७ वेनृ, इत्येके।
६१८ खनु, अवदारणे।
६१९ चीवृ, आदानसंवरणयोः।
६२० चायृ, पूजानिशामनयोः।
६२१ व्यय, गतौ।
६२२ दाशृ, दाने।
६२३ भेषृ, भये। गतावित्येके।
६२४ भ्रेषृ, भ्लेषृ, गतौ।
६२५ अस, गतिदीप्त्यादानेषु।
६२६ अष, इत्येके।
६२७ स्पश, बाधनस्पर्शयोः।
६२८ लष, कान्तौ।
६२९ चष, भक्षणे।
६३० छष, हिंसायाम्।
६३१ झष, आदानसंवरणयोः।
६३२ भ्रक्ष, भ्लक्ष, अदने।
६३३ भक्ष इत्येके।
६३४ प्लक्ष, च।
६३५ दासृ, दाने।
६३६ माहृ, माने।
६३७ गुहू, संवरणे।
इत्युदात्ताः स्वरितेतः॥

३८+८८१=९१९

अथाऽजन्ताः श्रिञादयो नयत्यन्ताः पञ्चोभयतोभाषाः

६३८ श्रिञ्, सेवायाम्।
उदात्तः॥
३३९ भृञ्, भरणे।
३४० हृञ्, हरणे।
६४१ धृञ्, धारणे।[1]

---

१. इतोऽग्रे 'कृञ् करणे' इत्यपि केचित् पठन्ति, तदनार्षम् इति माधवीय धातुवृत्तिकारः।

६४२ णीञ् प्रापणे।

इति भरत्यादयोऽनुदात्ताः।।

५+९१९=९२४

अथ धेटादयो ज्ञयत्यन्ताः

षट्चत्वारिंशत्परस्मैभाषाः

६४३ धेट्, पाने।

६४४ ग्लै, म्लै, हर्षक्षये।

६४५ द्यै, न्यक्करणे।

६४६ द्रै, स्वप्ने।

६४७ ध्रै, तृप्तौ।

६४८ ध्यै, चिन्तायाम्।

६४९ रै, शब्दे।

६५० स्त्यै, ष्ट्यै, शब्दसंघातयोः।

६५१ खै, खदने।

६५२ क्षै, जै, षै, क्षये।

६५३ कै, गै, शब्दे।

६५४ शै, श्रै, पाके।

६५५ पै, ओवै, शोषणे।

६५६ ष्टै, वेष्टने।

६५७ ष्णै, वेष्टने। शोभायां चेत्येके।

६५८ दैप्, शोधने।

६५९ पा, पाने।

६६० घ्रा, गन्धोपादाने।

६६१ ध्मा, शब्दाग्निसंयोगयोः।

६६२ ष्ठा, गतिनिवृत्तौ।

६६३ म्ना, अभ्यासे।

६६४ दाण्, दाने।

६६५ ह्वृ, कौटिल्ये।

६६६ स्वृ, शब्दोपतापयोः।

६६७ स्मृ, चिन्तायाम्।

६६८ वृ, संवरणे।

६६९ सृ, गतौ।

६७० ऋ, गतिप्रापणयोः।

६७१ गृ, घृ, सेचने।

६७२ ध्वृ, हूर्छने।

६७३ स्रु, गतौ।

६७४ षु, प्रसवैश्वर्ययोः।

६७५ श्रु, श्रवणे।

६७६ ध्रु, स्थैर्ये।

६७७ दु, द्रु, गतौ।

६७८ जि, ज्रि, अभिभवे।

इत्यनुदात्ताः।।

४६+९२४=९७०

अथ ष्मिङादयो डीङन्तास्त्रयो-विंशतिरात्मनेभाषाः

६७९ ष्मिङ्, ईषद्धसने।

६८० गुङ्, अव्यक्ते शब्दे।

६८१ गाङ्, गतौ।

६८२ उङ्, कुङ्, खुङ्, गुङ्, घुङ्, ङुङ्, शब्दे।
६८३ क्रुङ्, खुङ्, गुङ्, घुङ्, चेत्याहुरन्ये।
६८४ च्युङ्, ज्युङ्, प्रुङ्, प्लुङ्, गतौ।
६८५ क्लुङ्, इत्येके।
६८६ रुङ्, गतिरेषणयोः।
६८७ धृङ्, अवध्वंसने।
६८८ मेङ्, प्रणिदाने।
६८९ देङ्, रक्षणे।
६९० श्यैङ्, गतौ।
६९१ प्यैङ्, वृद्धौ।
६९२ त्रैङ्, पालने।
ष्मिङ्प्रभृतयोऽनुदात्ताः।।
६९३ पूङ्, पवने।
६९४ मूङ्, बन्धने।
६९५ डीङ्, विहायसा गतौ।।
इति पूङादय उदात्ताः।।
२३+९७०=९९३

अथैकः परस्मैभाषः

६९६ तॄ, प्लवनसंतरणयोः।
उदात्तः।।
१+९९३=९९४

अथ गुपादयो हदत्यन्ता अष्टावात्मनेभाषाः

६९७ गुप, गोपने।
६९८ तिज, निशाने।
६९९ मान, पूजायाम्।
७०० बध, बन्धने।
गुपादयश्चत्वार उदात्ता अनुदात्तेतः।।
७०१ रभ, राभस्ये।
७०२ डुलभष्, प्राप्तौ।
७०३ ष्वञ्ज, परिष्वङ्गे।
७०४ हद, पुरीषोत्सर्गे।
रभादयश्चत्वारोऽनुदात्ता अनुदात्तेतः।।
८+९९४=१००२

अथ ष्विदादयो मेहत्यन्ताः पञ्चदश परस्मैभाषाः

७०५ ञिष्विदा, अव्यक्ते शब्दे।
उदात्तः।।
७०६ स्कन्दिर्, गतिशोषणयोः।
७०७ यभ, मैथुने।
७०८ णम, प्रह्वत्वे शब्दे च।
७०९ गम्लृ, सृप्लृ, गतौ।
७१० यम, उपरमे।
७११ तप, सन्तापे।

७१२ त्यज, हानौ।

७१३ षञ्ज, सङ्गे।

७१४ दृशिर्, प्रेक्षणे।

७१५ दंश, दशने।

७१६ कृष, विलेखने।

७१७ दह, भस्मीकरणे।

७१८ मिह, सेचने।

स्कन्दादयोऽनुदात्ताः।।

इति स्विदादय उदात्तेतः।।

१५+१००२=१०१७

अथैकः परस्मैभाषः

७१९ कित, निवासे रोगापनयने च।

उदात्तेत्।।

१+१०१७=१०१८

अथ द्वावुभयतोभाषौ

७२० दान, खण्डने।

७२१ शान, तेजने।

इति स्वरितेतौ।।

२+१०१८=१०२०

अथ पचादयो वहत्यन्ता नवोभयतोभाषाः

७२२ डुपचष्, पाके।

७२३ षच, समवाये।

७२४ भज, सेवायाम्।

७२५ रञ्ज, रागे।

७२६ शप, आक्रोशे।

७२७ त्विष, दीप्तौ।

७२८ यज, देवपूजासंगतिकरण-दानेषु।

७२९ डुवप, बीजसन्ताने छेदने च।

७३० वह, प्रापणे।

इति पचादयोऽनुदात्ताः स्वरितेतः, सचतिस्तूदात्तः।

९+१०२०=१०२९

अथैकः परस्मैभाषः

७३१ वस, निवासे।

अनुदात्त उदात्तेत्।।

१+१०२९=१०३०

अथ वेञादयस्त्रय उभयतोभाषाः

७३२ वेञ्, तन्तुसन्ताने।

७३३ व्येञ्, संवरणे।

७३४ ह्वेञ्, स्पर्द्धायां शब्दे च।

इति वेञादयोऽनुदात्ताः।।

३+१०३०=१०३३

अथ द्वौ परस्मैभाषौ

७३५ वद, व्यक्तायां वाचि।

७३६ टुओश्वि, गतिवृद्ध्योः।

इत्युदात्तावुदात्तेतौ।

७३७ वृत्[1]।

यजादिर्गणः समाप्तः।।

२+१०३३=१०३५

भ्वादिगणस्थाः सम्मेल्य धातवः १०३५।।

इति शब्विकरणा भ्वादयः समाप्ताः।।

---

१. इदं वृत्करणं यजादिगणस्य समाप्तिं द्योतयति, नैव भौवादिकस्य गणस्य। तेनाऽऽकृतिगणो भौवादिकः। अतो धातुपाठेऽपठितेभ्योऽन्यगणपठि-तेभ्यश्च शब्विकरणस्य साधुत्वं ज्ञेयम्। यजादिर्गणः समाप्त इत्यर्थः।

अथाऽदादिर्गण:

अथ द्वौ परस्मैभाषौ

१ अद, भक्षणे।

२ हन, हिंसागत्यो:।

इत्यनुदात्तावुदात्तेतौ।।

=२

अथ चत्वार उभयतोभाषा:

३ द्विष, अप्रीतौ।

४ दुह, प्रपूरणे।

५ दिह, उपचये।

६ लिह, आस्वादने।

इति द्विषादयोऽनुदात्ता: स्वरितेत:।।

४+२=६

अथैक आत्मनेभाष:

७ चक्षिङ्, व्यक्तायां वाचि।

अयं दर्शनेऽपि।

अनुदात्तोऽनुदात्तेत्।।

१+६=७

अथेरादय: पृच्यन्तास्त्रयोदशात्मनेभाषा:

८ ईर, गतौ कम्पने च।

९ ईड, स्तुतौ।

१० ईश, ऐश्वर्ये।

११ आस, उपवेशने।

१२ आङ: शासु, इच्छायाम्।

१३ वस, आच्छादने।

१४ कसि, गतिशासनयो:।

१५ कस, इत्येके।

१६ कश, इत्यन्ये।

१७ णिसि, चुम्बने।

१८ णिजि, शुद्धौ।

१९ शिजि, अव्यक्ते शब्दे।

२० पिजि, वर्णे।

२१ पृजि, इत्येके।

२२ वृजी, वर्जने।

२३ पृची, संपर्चने।

इतीरादय उदात्ता अनुदात्तेत:।।

१३+७=२०

अथ द्वावात्मनेभाषौ

२४ षूङ्, प्राणिगर्भविमोचने।

२५ शीङ्, स्वप्ने।

इत्युदातौ।।

२+२०=२२

अथ षट् परस्मैभाषाः

२६ यु, मिश्रणे अमिश्रणे च।

२७ रु, शब्दे।

२८ णु, स्तुतौ।

२९ टुक्षु, शब्दे।

३० क्ष्णु, तेजने।

३१ ष्णु, प्रस्रवणे।

इत्युदात्ताः।।

६+२२=२८

अथैक उभयतोभाषः

३२ ऊर्णुञ्, आच्छादने।

उदात्तः।।

१+२८=२९

अथ त्रयः परस्मैभाषाः

३३ द्यु अभिगमने।

३४ षु, प्रसवैश्वर्ययोः।

३५ कु, शब्दे।

(तु, गतिवृद्धिहिंसासु, सौत्रः)

इत्यनुदात्ताः।।

३+२९=३२

अथ द्वावुभयतोभाषौ

३६ ष्टुञ्, स्तुतौ।

३७ ब्रूञ्, व्यक्तायां वाचि।

इत्यनुदात्तौ।।

२+३२=३४

अथैकोनविंशतिः परस्मैभाषाः

इङ्त्वात्मनेभाषः

३८ इण्, गतौ।

३९ इङ्, अध्ययने।

४० इक्, स्मरणे।

४१ वी, गतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु।

४२ या, प्रापणे।

४३ वा, गतिगन्धनयोः।
४४ भा, दीप्तौ।
४५ ष्णा, शौचे।
४६ श्रा, पाके।
४७ द्रा, कुत्सायां गतौ।
४८ प्सा, भक्षणे।
४९ पा, रक्षणे।
५० रा, दाने।
५१ ला, आदाने।
५२ दाप्, लवने।
५३ ख्या, प्रकथने।
५४ प्रा, पूरणे।
५५ मा, माने।
५६ वच, परिभाषणे।
इत्यनुदात्ताः वचिस्तूदात्तेत्।।
१९+३४=५३

अथ चत्वारः परस्मैभाषाः

५७ विद, ज्ञाने।
५८ अस, भुवि।
५९ मृजूष्, शुद्धौ।
६० रुदिर्, अश्रुविमोचने।
इत्युदात्ता उदात्तेतः।।
४+५३=५७

अथैकः परस्मैभाषः

६१ ञिष्वप, शये।
इत्यनुदात्त उदात्तेत्।।
१+५७=५८

अथ सप्त परस्मैभाषाः

६२ श्वस, प्राणने।
६३ अन, च।
६४ जक्ष, भक्षहसनयोः।
उदात्ता उदात्तेतः।
६५ जागृ, निद्राक्षये।
६६ दरिद्रा, दुर्गतौ।
उदात्तौ।
६७ चकासृ, दीप्तौ।
६८ शासु, अनुशिष्टौ।
इत्युदात्तावुदात्तेतौ ।।
७+५८=६५

अथ द्वावात्मनेभाषौ

६९ दीधीङ्, दीप्तिदेवनयोः।
७० वेवीङ्, वेतिना तुल्ये।
इत्युदात्तौ।।
२+६५=६७

अथ त्रयः परस्मैभाषाः

७१ षस, षसि, स्वप्ने।

७२ वश, कान्तौ।

इत्युदात्ता उदात्तेतः।।

७३ चर्करीतञ्च।

३+६७=७०

अथैक आत्मनेभाषः

७४ ह्नुङ्, अपनयने।

अनुदात्तः।।

१+७०=७१

अदादिगणस्था धातवः ७१

प्राक्तना धातवः १०३५

सम्मेल्य धातवः ११०६

इति लुग्विकरणा अदादयः।।

अथ जुहोत्यादिर्गणः

अथ त्रयः परस्मैभाषाः

१ हु, दानादनयोः। आदाने चेत्येके।

२ ञिभी, भये।

३ ह्री लज्जायाम्।

इत्यनुदात्ताः।।

=३

अथैकः परस्मैभाषः

४ पॄ, पालनपूरणयोः।

ह्रस्वान्तोऽयमित्येके।

उदात्तः।।

१+३=४

अथैक उभयतोभाषः

५ डुभृञ्, धारणपोषणयोः।

अनुदात्तः।।

१+४=५

अथ द्वावात्मनेभाषौ

६ माङ्, माने शब्दे च।

७ ओहाङ्, गतौ।

इत्यनुदात्तौ।।

२+५=७

अथैकः परस्मैभाषः

८ ओहाक्, त्यागे।

अनुदात्तः।।

१+७=८

अथ द्वावुभयतोभाषौ

९ डुदाञ्, दाने।

१० डुधाञ्, धारणपोषणयोः।

इत्यनुदात्तौ।।

२+८=१०

अथ त्रय उभयतोभाषाः

११ णिजिर्, शौचपोषणयोः।

१२ विजिर्, पृथग्भावे।

१३ विष्लृ, व्याप्तौ।
इत्यनुदात्ताः स्वरितेतः।।
३+१०=१३

अथागणान्ताः परस्मैभाषाः
छान्दसाश्चैकादश

१४ घृ, क्षरणदीप्त्योः।
१५ हृ, प्रसह्यकरणे।
१६ ऋ, सृ, गतौ।
घ्रादयश्चत्वारोऽनुदात्ताः।।
१७ भस, भर्त्सनदीप्त्योः।
उदात्त उदात्तेत्।।
१८ कि, ज्ञाने।
अनुदात्तः।।
१९ तुर, त्वरणे।
२० धिष, शब्दे।
२१ धन, धान्ये।
२२ जन, जनने।
तुरादय उदात्ता उदात्तेतः।।
२३ गा, स्तुतौ।
अनुदात्तः।।
२४ छन्दसि वृत्।।
११+१३=२४

जुहोत्यादिगणस्था धातवः	२४
प्राक्तना धातवः	११०६
सम्मेल्य धातवः	**११३०**

इति श्लुविकरणा जुहोत्यादयः।।

अथ दिवादिर्गणः

अथ दिवादयः षड्विंशतिः
परस्मैभाषाः

१ दिवु, क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु।

२ षिवु, तन्तुसन्ताने।

३ स्रिवु, गतिशोषणयोः।

४ ष्ठिवु, निरसने।

५ ष्णुसु, अदने। आदान इत्येके। अदर्शन इत्यपरे।

६ ष्णसु, निरसने।

७ क्नसु, ह्वरणदीप्त्योः।

८ व्युष, दाहे। बकारादिरित्येके।

९ प्लुष, च।

१० नृती, गात्रविक्षेपे।

११ त्रसी, उद्वेगे।

१२ कुथ, पूतीभावे।

१३ पुथ, हिंसायाम्।

१४ गुध, परिवेष्टने।

१५ क्षिप, प्रेरणे। अनुदात्तः।।

१६ पुष्प, विकसने।

१७ तिम, तीम, ष्टिम, ष्टीम, आर्द्रीभावे।

१८ व्रीड, चोदने लज्जायाञ्च।

१९ इष, गतौ।

२० षह, षुह, चक्यर्थे।

२१ जॄष्, झॄष्, वयोहानौ।

इत्युदात्ता उदात्तेतः।।

=२६

अथ द्वावात्मनेभाषौ

२२ षूङ्, प्राणिप्रसवे।

२३ दूङ्, परितापे।

इत्युदात्तौ।।

२+२६=२८

अथ दीङादय एकादश
आत्मनेभाषाः

२४ दीङ्, क्षये।

२५ डीङ्, विहायसा गतौ।

२६ धीङ्, आधारे।

२७ मीङ्, हिंसायाम्।

२८ रीङ्, स्रवणे।

२९ लीङ्, श्लेषणे।

३० व्रीङ्, वृणोत्यर्थे।

(वृत्)

३१ स्वादय ओदितः।
३२ पीङ्, पाने।
३३ माङ्, माने।
३४ ईङ्, गतौ।
३५ प्रीङ्, प्रीणने।
इति दीङादय अनुदात्ताः, डीङ् तूदात्तः।।
११+२८=३९

अथ चत्वारः परस्मैभाषाः

३६ शो, तनूकरणे।
३७ छो, छेदने।
३८ षो, अन्तकर्मणि।
३९ दो, अवखण्डने।
श्यतिप्रभृतयोऽनुदात्ताः।।
४+३९=४३

अथ पञ्चदशात्मनेभाषाः

४० जनी, प्रादुर्भावे।
४१ दीपी, दीप्तौ।
४२ पूरी, आप्यायने।
४३ तूरी, गतित्वरणहिंसनयोः।
४४ धूरी, गूरी, हिंसागत्योः।
४५ घूरी, जूरी, हिंसावयोहान्योः।
४६ शूरी, हिंसास्तम्भनयोः।
४७ चूरी, दाहे।
४८ तप, ऐश्वर्ये।
४९ वावृतु, वरणे।
५० क्लिश, उपतापे।
५१ काशृ, दीप्तौ।
५२ वाशृ, शब्दे।
इति तपिवर्जमुदात्ता अनुदात्तेतः।।
१५+४३=५८

अथ द्वावुभयतोभाषौ

५३ मृष, तितिक्षायाम्।
५४ ईशुचिर्, पूतीभावे।
उदात्तौ, स्वरितेतौ।
२+५८=६०

अथ त्रय उभयतोभाषाः

५५ णह, बन्धने।
५६ रञ्ज, रागे।
५७ शप, आक्रोशे।
इत्यनुदात्ताः स्वरितेतः।।
३+६०=६३

अथैकादशात्मनेभाषाः

५८ पद, गतौ।
५९. खिद, दैन्ये।

६० विद, सत्तायाम्।
६१ बुध, अवगमने।
६२ युध, संप्रहारे।
६३ अनो रुध, कामे।
६४ अण, प्राणने।
उदात्तः।।
६५ मन, ज्ञाने।
६६ युज, समाधौ।
६७ सृज, विसर्गे।
६८ लिश, अल्पीभावे।
इत्यनुदात्ता अनुदात्तेतः।।
११+६३=७४

अथागणान्ताः सप्तषष्टिः परस्मैभाषाः

६९ राधोऽकर्मकाद् वृद्धावेव।
७० व्यध, ताडने।
७१ पुष, पुष्टौ।
७२ शुष, शोषषे।
७३ तुष, प्रीतौ।
७४ दुष, वैकृत्ये।
७५ श्लिष, आलिङ्गने।
७६ शक, विभाषितो मर्षणे।
७७ ञिष्विदा, गात्रप्रक्षरणे।
७८ क्रुध, क्रोधे।
७९ क्षुध, बुभुक्षायाम्।
८० शुध, शौचे।
८१ षिधु, संराद्धौ।
इत्यनुदात्ता उदात्तेतः।।
८२ रध, हिंसासंराध्योः।
८३ णश, अदर्शने।
८४ तृप, प्रीणने।
८५ दृप, हर्षमोहनयोः।
८६ द्रुह, जिघांसायाम्।
८७ मुह, वैचित्त्ये।
८८ ष्णुह, उद्गिरणे।
८९ ष्णिह, प्रीतौ।
९० वृत्[1]।
रधादय उदात्ता उदात्तेतः,
तृतिदृपी त्वनुदात्तौ।।
९१ शमु, उपशमे।
९२ तमु, काङ्क्षायाम्।
९३ दमु, उपशमे।
९४ श्रमु, तपसि खेदे च।
९५ भ्रमु, अनवस्थाने।
९६ क्षमूष्, सहने।
९७ क्लमु, ग्लानौ।
९८ मदी, हर्षे।
(इत्यष्टौ शमादयः)
९९ असु, क्षेपणे।

---

१. रधादिर्गणः समाप्त इत्यर्थः।

१०० यसु, प्रयत्ने।
१०१ जसु, मोक्षणे।
१०२ तसु, उपक्षये।
१०३ दसु, च।
१०४ वसु, स्तम्भे।
बशादिरित्येके[१]।
१०५ व्युष, विभागे। ओष्ठ्यादि-दन्त्यान्त्यो ब्युस इत्यन्ये। अयकारो बुस इत्यपरे।
१०६ प्लुष, दाहे।
१०७ बिस, प्रेरणे।
१०८ कुस, संश्लेषणे।
१०९ बुस, उत्सर्गे।
११० मुस, खण्डने।
१११ मसी, परिणामे।
११२ समी, इत्येके।
११३ लुठ, विलोडने।
११४ उच, समवाये।
११५ भृशु, भ्रंशु, अधःपतने।
११६ वृश, वरणे।
११७ कृश, तनूकरणे।
११८ ञितृष, पिपासायाम्।
११९ हृष, तुष्टौ।
१२० रुष, रिष, हिंसायाम्।
१२१ डिप, क्षेपे।
१२२ कुप, क्रोधे।
१२३ गुप, व्याकुलत्वे।
१२४ युप, रुप, लुप, विमोहने।
१२५ लुभ, गार्ध्ये।
१२६ क्षुभ, संचलने।
१२७ णभ, तुभ, हिंसायाम्।
१२८ क्लिदू, आर्द्रीभावे।
१२९ ञिमिदा, स्नेहने।
१३० ञिक्ष्विदा, स्नेहनमोचनयोः।
१३१ ऋधु, वृद्धौ।
१३२ गृधु, अभिकाङ्क्षायाम्।
१३३ वृत्[२]।
इत्युदात्ता उदात्तेतः॥
६७+७४=१४१

दिवादिगणस्था धातवः	१४१
प्राक्तना धातवः	११३०
सम्मेल्य धातवः	१२७१

इति श्यन्विकरणा दिवादयः॥

१. बशादिप्रत्यये बकारः, तदादिरित्यर्थः।

२. दिवादिर्गणः समाप्त इत्यर्थः। अन्ये वृत्करणं न पठन्ति, आकृतिगणं च दिवादिगणं मन्यन्ते।

अथ स्वादिर्गणः

अथ स्वादयो नवोभयतोभाषाः

१ षुञ्, अभिषवे।

२ षिञ्, बन्धने।

३ शिञ्, निशाने।

४ डुमिञ्, प्रक्षेपणे।

५ चिञ्, चयने।

६ स्तृञ्, आच्छादने।

७ कृञ्, हिंसायाम्।

८ वृञ्, वरणे।

९ धुञ्, कम्पने।

दीर्घान्तोऽपीत्येके।

इति वृञ्वर्जमनुदात्ताः।।

=९

अथाष्टौ परस्मैभाषाः

१० टुदु, उपतापे।

११ हि, गतौ वृद्धौ च।

१२ पृ, प्रीतौ।

१३ स्पृ, प्रीतिसेवनयोः।

प्रीतिचलनयोरित्यन्ये।

१४ स्मृ, इत्येके।

अनुदाताः।।

१५ आप्लृ, व्याप्तौ।

१६ शक्लृ, शक्तौ।

१७ राध, साध, संसिद्धौ।

इत्यनुदात्ता उदात्तेतः।।

८+९=१७

अथ द्वावात्मनेभाषौ

१८ अशू, व्याप्तौ संघाते च।

१९ ष्टिघ, आस्कन्दने।

इत्युदात्तावनुदात्तेतौ।।

२+१७=१९

अथागणान्ताः पञ्चदश परस्मैभाषाः

२० तिक, तिग, गतौ च।

२१ षघ, हिंसायाम्।

२२ ञिधृषा, प्रागल्भ्ये।

२३ दम्भु, दम्भने।

२४ ऋधु, वृद्धौ।

२५ छन्दसि।

२६ तृप, प्रीणन इत्येके।

२७ अह, व्याप्तौ।

२८ दघ, घातने पालने च।

२९ चमु, भक्षणे।

३० रि, क्षि, चिरि, जिरि, दाशृ, दृ, हिंसायाम्।

इत्युदात्ता उदात्तेतः।।

१५+१९=३४

स्वादिगणस्था धातवः	३४
प्राक्तना धातवः	१२७१
सम्मेल्य धातवः	**१३०५**

इति श्नुविकरणाः स्वादयः।।

अथ तुदादिर्गण:

अथ षडुभयतोभाषा:

१ तुद, व्यथने।

२ णुद, प्रेरणे।

३ दिश, अतिसर्जने।

४ भ्रस्ज, पाके।

५ क्षिप, प्रेरणे।

६ कृष, विलेखने।

इत्यनुदात्ता: स्वरितेत:।।

=६

अथैक: परस्मैभाष:

७ ऋषी, गतौ।

उदात्त उदात्तेत्।।

१+६=७

अथ चत्वार आत्मनेभाषा:

८ जुषी, प्रीतिसेवनयो:।

९ ओविजी, भयचलनयो:।

१० ओलजी, ओलस्जी, व्रीडायाम्।

इत्युदात्ता अनुदात्तेत:।।

४+७=११

अथ व्रश्चादयो द्व्युत्तरशतं परस्मैभाषा:

११ ओव्रश्चू, छेदने।

१२ व्यच, व्याजीकरणे।

१३ उछि, उञ्छे।

१४ उछी, विवासे।

१५ ऋछ, गतीन्द्रियप्रलयमूर्त्तिभावेषु।

१६ मिछ, उत्क्लेशे।

१७ जर्ज, चर्च, झर्झ, परिभाषणभर्त्सनयो:।

१८ त्वच, संवरणे।

१९ ऋच, स्तुतौ।

२० उब्ज, आर्जवे।

२१ उज्झ, उत्सर्गे।

२२ लुभ, विमोहने।
२३ रिफ, कत्थनयुद्धनिन्दा-
हिंसादानेषु।
२४ रिह, इत्येके।
२५ तृप, तृम्प, तृप्तौ।
२६ तृफ, तृम्फ इत्येके।
२७ तुप, तुम्प, तुफ, तुम्फ,
हिंसायाम्।
२८ दृफ, दृम्फ, उत्क्लेशे।
२९ दृप, दृम्प इत्यन्ये।
३० ऋफ, ऋम्फ, हिंसायाम्।
३१ गुफ, गुम्फ, ग्रन्थे।
३२ उभ, उम्भ, पूरणे।
३३ शुभ, शुम्भ, शोभार्थे।
३४ दृभी, ग्रन्थे।
३५ चृती, हिंसाग्रन्थनयोः।
३६ विध, विधाने।
३७ जुड, गतौ।
३८ जुन, इत्येके।
३९ मृड, सुखने।
४० पृड, च।
४१ पृण, प्रीणने।
४२ वृण, च।
४३ मृण, हिंसायाम्।
४४ तुण, कौटिल्ये।
४५ पुण, कर्मणि शुभे।
४६ मुण, प्रतिज्ञाने।
४७ कुण, शब्दोपकरणयोः।
४८ शुन, गतौ।
४९ द्रुण, हिंसागतिकौटिल्येषु।
५० घुण, घूर्ण, भ्रमणे।
५१ षुर, ऐश्वर्यदीप्त्योः।
५२ कुर, शब्दे।
५३ खुर, छेदने।
५४ मुर, संवेष्टने।
५५ क्षुर, विलेखने।
५६ घुर, भीमार्थशब्दयोः।
५७ पुर, गमने।
५८ वृहू, उद्यमने।
५९ बृहू, इत्येके।
६० तृहू, स्तृहू, तृंहू, हिंसार्थाः।
६१ इषु, इच्छायाम्।
६२ मिष, स्पर्द्धायाम्।
६३ किल, श्वैत्यक्रीडनयोः।
६४ तिल, स्नेहे।
६५ चिल, वसने।
६६ चल, विलसने।
६७ इल, स्वप्नक्षेपणयोः।
६८ विल, संवरणे।
६९ बिल, भेदने।
७० णिल, गहने।
७१ हिल, भावकरणे।
७२ शिल, षिल, उञ्छे।
७३ मिल, श्लेषणे।

७४ लिख, अक्षरविन्यासे।
७५ कुट, कौटिल्ये।
७६ पुट, संश्लेषणे।
७७ कुच, संकोचने।
७८ गुज, शब्दे।
७९ गुड, रक्षायाम्।
८० डिप, क्षेपे।
८१ छुर, छेदने।
८२ स्फुट, विकसने।
८३ मुट, आक्षेपप्रमर्दनयोः।
८४ त्रुट, छेदने।
८५ तुट, कलहकर्मणि।
८६ चुट, छुट, छेदने।
८७ जुड, बन्धने।
८८ कड, मदे।
८९ लुट, संश्लेषणे।
९० लुठ, इत्येके।
९१ कृड, घनत्वे।
९२ कुड, बाल्ये।
९३ पुड, उत्सर्गे।
९४ घुट, प्रतिघाते।
९५ तुड, तोडने।
९६ थुड, स्थुड, संवरणे।
९७ खुड, छुड, इत्यन्ये।
९८ संघात इत्यपरे।
९९ स्फुर, स्फुरणे।
१०० स्फर, इत्येके।
१०१ स्फुल, संचलने।
१०२ स्फुड, चुड, व्रुड, संवरणे।
१०३ क्रुड, भ्रुड, निमज्जने।

इत्युदात्ता उदात्तेतः।।

१०२+११=११३

अथैक आत्मनेभाषः

१०४ गुरी उद्यमने।

इत्युदात्तोऽनुदात्तेत्।।

१+११३=११४

अथ चत्वारः परस्मैभाषाः

१०५ णू, स्तवने।
१०६ धू, विधूनने।
१०७ गु, पुरीषोत्सर्गे।
१०८ ध्रु, गतिस्थैर्ययोः।
१०९ ध्रुव, इत्येके।

इत्युदात्ताः। गुध्रू त्वनुदात्तौ।।

४+११४=११८

अथैक आत्मनेभाषः

११० कूङ् शब्दे।

इत्युदात्तः।।

१ १ १ कुङ्, शब्द इत्येके।
अनुदात्तः।।
(वृत्) इति कुटादिर्गणः।।
१+११८=११९

अथ द्वावात्मनेभाषौ

१ १ २ पृङ्, व्यायामे।
१ १ ३ मृङ्, प्राणत्यागे।
इत्यनुदात्तौ।।
२+११९=१२१

अथ सप्त परस्मैभाषाः

१ १ ४ रि, पि, गतौ।
१ १ ५ धि, धारणे।
१ १ ६ क्षि, निवासगत्योः।
इत्यनुदात्ताः।।
१ १ ७ षू, प्रेरणे।
१ १ ८ कॄ, विक्षेपे।
१ १ ९ गॄ, निगरणे।
इत्युदात्ताः।।
७+१२१=१२८

अथ द्वावात्मनेभाषौ

१ २ ० दृङ्, आदरे।
१ २ १ धृङ्, अवस्थाने।
इत्यनुदात्तौ।।
२+१२८=१३०

अथ षोडश परस्मैभाषाः

१ २ २ प्रछ, ज्ञीप्सायाम्।
१ २ ३ वृत् (इति किरादयः)।
१ २ ४ सृज, विसर्गे।
१ २ ५ टुमस्जो, शुद्धौ।
१ २ ६ रुजो, भङ्गे।
१ २ ७ भुजो, कौटिल्ये।
१ २ ८ छुप, स्पर्शे।
१ २ ९ रुश, रिश, हिंसायाम्।
१ ३ ० लिश, गतौ।
१ ३ १ स्पृश, संस्पर्शने।
१ ३ २ विछ, गतौ।
१ ३ ३ विश, प्रवेशने।
१ ३ ४ मृश, आमर्शने।
१ ३ ५ णुद, प्रेरणे।
१ ३ ६ षद्लृ विशरणगत्यव-
सादनेषु।
१ ३ ७ शद्लृ, शातने।
इत्यनुदात्ता उदात्तेतः।
विच्छिस्तूदात्त उदात्तेत्।।
१६+१३०=१४६

अथ षडुभयतोभाषाः

१ ३ ८ मिल, संगमे।

१ ३ ९ मुच्लृ, मोचने।

१ ४ ० लुप्लृ, छेदने।

१ ४ १ विद्लृ, लाभे।

१ ४ २ लिप, उपदेहे।

१ ४ ३ षिच, क्षरणे।

इत्यनुदात्ताः स्वरितेतः।

मिलिविदी तूदात्तौ

स्वरितेतौ।।

६+१४६=१५२

अथ त्रयः परस्मैभाषाः

१ ४ ४ कृती, छेदने।

१ ४ ५ खिद, परिघातने।

१ ४ ६ पिश, अवयवे।

इत्युदात्ता उदात्तेतः।

खिदिस्त्वनुदात्तः।।

१ ४ ७ वृत्[१]।

३+१५२=१५५

तुदादिगणस्था धावतः	१ ५ ५
प्राक्तना धातवः	१ ३ ० ५
सम्मेल्य धातवः	**१४६०**

इति शविकरणास्तुदादयः।।

---

१. तुदादिर्गणः समाप्त इत्यर्थः।

अथ रुधादिर्गण:

अथ नवोभयतोभाषा:

१ रुधिर् आवरणे।

२ भिदिर्, विदारणे।

३ छिदिर्, द्वैधीकरणे।

४ रिचिर्, विरेचने।

५ विचिर्, पृथग्भावे।

६ क्षुदिर्, संपेषणे।

७ युजिर्, योगे।

८ उच्छृदिर्, दीप्तिदेवनयो:।

९ उतृदिर्, हिंसानादरयो:।

इत्यनुदात्ता: स्वरितेत:।

छृदितृदी तूदात्तौ स्वरितेतौ।।

=९

अथैक: परस्मैभाष:

१० कृती, छेदने।

इत्युदात्त उदात्तेत्।।

१+९=१०

अथैक आत्मनेभाष:

११ ञिइन्धी, दीप्तौ।

उदात्तोऽनुदात्तेत्।।

१+१०=११

अथ द्वावात्मनेभाषौ

१२ खिद, दैन्ये।

१३ विद, विचारणे।

इत्यनुदात्तावनुदात्तेतौ।

२+११=१३

अथ द्वादश परस्मैभाषा:

१४ शिष्लृ, विशेषणे।

१५ पिष्लृ, संचूर्णने।

१६ भञ्जो, आमर्दने।

१७ भुज, पालनाभ्यवहारयो:।

१८ तृह, हिसि, हिंसायाम्।

१९ उन्दी, क्लेदने।

२० अञ्जू, व्यक्तिम्रक्षणकान्ति-
गतिषु।
२१ तञ्चू, संकोचने।
२२ ओविजी, भयचलनयोः।
२३ वृजी, वर्जने।
२४ पृची, संपर्के।
इत्युदात्ता उदात्तेतः, आद्याश्-
चत्वारस्त्वनुदात्ताः।।
२५ वृत्।

१२+१३=२५

रुधादिगणस्था धातवः	२५
प्राक्तना धातवः	१४६०
सम्मेल्य धातवः	**१४८५**

इति श्नम्विकरणा रुधादयः।।

अथ तनादिर्गणः

अथ सप्तोभयतोभाषाः

१ तनु, विस्तारे।

२ षणु, दाने।

३ क्षणु, हिंसायाम्।

४ क्षिणु, च।

५ ऋणु, गतौ।

६ तृणु, अदने।

७ घृणु, दीप्तौ।

इत्युदात्ताः स्वरितेतः।।

=७

अथ द्वावात्मनेभाषौ

८ वनु, याचने।

९ मनु, अवबोधने।

इत्युदात्तावनुदात्तेतौ।।

२+७=९

अथैक उभयतोभाषः

१० डुकृञ्, करणे।

अनुदात्तः।।

११ वृत्।

१+९=१०

तनादिगणस्था धातवः	१०
प्राक्तना धातवः	१४८५
सम्मेल्य धातवः	**१४९५**

इत्युविकरणास्तनादयः।।

अथ क्र्यादिर्गणः

अथ सप्तोभयतोभाषाः

१ डुक्रीञ्, द्रव्यविनिमये।

२ प्रीञ्, तर्पणे कान्तौ च।

३ श्रीञ्, पाके।

४ मीञ्, हिंसायाम्।

५ षिञ्, बन्धने।

६ स्कुञ्, आप्रवणे।

७ युञ्, बन्धने।

इत्यनुदात्ताः, बन्ध इत्यनुदात्त उदात्तेत्।।

=७

अथ नवोभयतोभाषाः

८ क्नूञ्, शब्दे।

९ द्रूञ्, हिंसायाम्।

१० पूञ्, पवने।

११ मूञ्, बन्धने।

१२ लूञ्, छेदने।

१३ स्तॄञ्, आच्छादने।

१४ कॄञ्, हिंसायाम्।

१५ वॄञ्, वरणे।

१६ धूञ्, कम्पने।

इत्युदात्ताः।।

९+७=१६

अथ श्रादयो गृणात्यन्ता एकादश परस्मैभाषाः

१७ शॄ, हिंसायाम्।

१८ पॄ, पालनपूरणयोः।

१९ वॄ, वरणे। भरण इत्येके।

२० भॄ, भर्त्सने। भरण इत्यन्ये।

२१ मॄ, हिंसायाम्।

२२ दॄ, विदारणे।

२३ धॄ, इत्यन्ये।

२४ जॄ, वयोहानौ।

२५ झॄ, इत्येके।

२६ नॄ, नये।

२७ कॄ, हिंसायाम्।

२८ ॠ, गतौ।

२९ गॄ, शब्दे।

इत्युदात्ताः।।

११+१६=२७

अथैकादश परस्मैभाषाः

३० ज्या, वयोहानौ।
३१ व्री, वरणे।
३२ री, गतिरेषणयोः।
३३ ली, श्लेषणे।
३४ व्ली, वरणे।
३५ प्ली, गतौ।
३६ वृत्[1]।
३७ व्री, वरणे।
३८ भ्री, भये। भरण इत्येके।
३९ क्षीष्, हिंसायाम्।
४० ज्ञा, अवबोधने।
४१ बन्ध, बन्धने।
इत्यनुदात्ताः।

११+२७=३८

अथैक आत्मनेभाषः

४२ वृङ्, संभक्तौ।
इत्युदात्तः।।

१+३८=३९

अथ द्वाविंशतिः परस्मैभाषाः

४३ श्रन्थ, विमोचनप्रतिहर्षयोः।
४४ मन्थ, विलोडने।
४५ श्रन्थ, ग्रन्थ संदर्भे।
४६ कुन्थ, संश्लेषणे।
४७ मृद, क्षोदे।
४८ मृड, च। अयं सुखेऽपि।
४९ गुध, रोषे।
५० कुष, निष्कर्षे।
५१ क्षुभ, सञ्चलने।
५२ णभ, तुभ, हिंसायाम्।
५३ क्लिशू, विबाधने।
५४ अश, भोजने।
५५ उध्रस, उञ्छे।
५६ इष, आभीक्ष्ण्ये।
५७ विष, विप्रयोगे।
अनुदात्तः।।
५८ प्रुष, प्लुष, स्नेहनसेचन-पूरणेषु।
५९ पुष, पुष्टौ।
६० मुष, स्तेये।
६१ खच, भूतप्रादुर्भावे।
६२ खव, इत्येके।

---

१. वृत्करणं प्वादीनां समाप्तिं द्योतयति। केचनाऽऽगणान्तं प्वादय इति मन्यन्ते।

६३ हेठ, च।

इत्युदात्ता उदात्तेतः।।

२२+३९=६१

अथैक उभयतोभाषः

६४ ग्रह, उपादाने।

इत्युदात्तः स्वरितेत्।।

६५ वृत्।

१+६१=६२

क्र्यादिगणस्था धातवः	६२
प्राक्तना धातवः	१४९५
सम्मेल्य धातवः	**१५५७**

इति श्नाविकरणाः क्र्यादयः।।

अथ चुरादिर्गणः

अथ चुरादयः ष्टुप्यन्ता एकोन-पञ्चाशदुत्तरमेकशतमुदात्तेत:

१. चुर, स्तेये।

२. चिति, स्मृत्याम्।

३. यत्रि, सङ्कोचने।

४. स्फुडि, परिहासे।
स्फुटि इत्येके।

५. लक्ष, दर्शनाङ्कनयोः।

६. कुद्रि, अनृतभाषणे।

७. लड, उपसेवायाम्।

८. मिदि, स्नेहने।

९. ओलडि, उत्क्षेपणे।
उकारादिरित्यन्ये।

१०. जल, अपवारणे।

११. लज, इत्येके।

१२. पीड, अवगाहने।

१३. नट, अवस्पन्दने।

१४. श्रथ, प्रयत्ने।
प्रस्थान इत्येके।

१५. बध, संयमने।

१६. पॄ, पूरणे।

१७. ऊर्ज, बलप्राणनयोः।

१८. पक्ष, परिग्रहे।

१९. वर्ण, चूर्ण, प्रेरणे।

२०. वर्ण, वर्णन इत्येके।

२१. प्रथ, प्रख्याने।

२२. पृथ, प्रक्षेपे।

२३. पथ, इत्येके।

२४. षम्ब, संबन्धने।

२५. शम्ब, च।

२६. साम्ब, इत्येके।

२७. भक्ष, अदने।

२८. कुट्ट, छेदनभर्त्सनयोः।

२९. पूरण, इत्येके।

३०. पुट्ट, चुट्ट, अल्पीभावे।

३१. अट्ट, षुट्ट, अनादरे।

३२. लुण्ठ, स्तेये।

३३. शठ, श्वठ, असंस्कारगत्योः।

३४. श्वठि, इत्येके।

३५. तुज, तुजि, पिज, पिजि,
लजि, लुजि, हिंसाबलादान-
निकेतनेषु।

३६. पिस, गतौ।

३७. षान्त्व, सामप्रयोगे।

३८ श्वल्क, वल्क, परिभाषणे।
३९ ष्णिह, स्नेहने।
४० स्फिठ, इत्येके।
४१ स्मिट, अनादरे।
४२ ष्मिङ्, अनादर इत्येके।
४३ शिलष, श्लेषणे।
४४ पथि, गतौ।
४५ पिछ, कुट्टने।
४६ छदि, संवरणे।
४७ श्रण, दाने।
४८ तड, आघाते।
४९ खड, खडि, कडि, भेदने।
५० कुडि, रक्षणे।
५१ गुडि, वेष्टने। रक्षण इत्येके।
५२ कुठि, गुठि, चेत्यन्ये।
५३ खुडि, खण्डने।
५४ वठि, विभाजने।
५५ वडि, इत्येके।
५६ चडि, कोपे।
५७ मडि, भूषायां हर्षे च।
५८ भडि, कल्याणे।
५९ छर्द, वमने।
६० पुस्त, बुस्त, आदरानादरयोः।
६१ चुद, संचोदने।
६२ नक्क, धक्क, नाशने।
६३ चक्क, चुक्क, व्यथने।
६४ क्षल, शौचकर्मणि।
६५ तल, प्रतिष्ठायाम्।
६६ तुल, उन्माने।
६७ दुल, उत्क्षेपे।
६८ पुल, महत्त्वे।
६९ चुल, समुच्छ्राये।
७० मूल, रोहणे।
७१ बुल, निमज्जने।
७२ कल, विल, क्षेपे।
७३ बिल, भेदने।
७४ तिल, स्नेहने।
७५ चल, भृतौ।
७६ पाल, रक्षणे।
७७ लूष, हिंसायाम्।
७८ शुल्ब, माने।
७९ शूर्प, च।
८० चुट, छेदने।
८१ मुट, संचूर्णने।
८२ पडि, पसि, नाशने।
८३ व्रज, मार्ग, संस्कारगत्योः।
८४ शुल्क, अतिस्पर्शने।
८५ चपि, गत्याम्।
८६ क्षपि, क्षान्त्याम्।
८७ क्षजि, कृच्छ्रजीवने।
८८ श्वर्त्त, गत्याम्।
८९ श्वभ्र, च।
९० ज्ञप, मिच्च।
९१ यम, च परिवेषणे।

९२ चह, परिकल्कने।
९३ चप, इत्येके।
९४ रह, त्यागे।
९५ बल, प्राणने।
९६ चिञ्, चयने।
९७ नान्ये मितोऽहेतौ।
९८ घट्ट, चलने।
९९ मुस्त, संघाते।
१०० खट्ट, संवरणे।
१०१ षट्ट, स्फिट्ट, चुबि, हिंसायाम्।
१०२ पूल, सङ्घाते।
१०३ पूर्ण, इत्येके।
१०४ पुंस, अभिवर्द्धने।
१०५ टकि, बन्धने।
१०६ धूस, कान्तिकरणे।
१०७ धूष, इत्येके।
१०८ धूश, इत्यपरे।
१०९ कीट, वरणे।
११० चूर्ण, संकोचने।
१११ पूज, पूजायाम्।
११२ अर्क, स्तवने। तपन इत्येके।
११३ शुठ, आलस्ये।
११४ शुठि, शोषणे।
११५ जुड, प्रेरणे।
११६ गज, मार्ज, शब्दार्थौ।
११७ मर्च, च।
११८ घृ, प्रस्रवणे।
११९ पचि, विस्तारवचने।
१२० तिज, निशाने।
१२१ कॄत, संशब्दे।
१२२ वर्ध, छेदनपूरणयोः।
१२३ कुबि, आच्छादने।
१२४ कुभि, इत्येके।
१२५ लुबि, तुबि, अदर्शने। अर्द्दन इत्येके।
१२६ ह्लप, व्यक्तायां वाचि।
१२७ क्लप, इत्येके।
१२८ चुटि, छेदने।
१२९ इल, प्रेरणे।
१३० म्रछ, म्लेच्छने।
१३१ म्लेछ, अव्यक्तायां वाचि।
१३२ ब्रूस, बर्ह, हिंसायाम्।
१३३ गर्ज, गर्द, शब्दे।
१३४ गर्ध, अभिकाङ्क्षायाम्।
१३५ गुर्द, पुर्व, निकेतने।
१३६ जसि, रक्षणे। मोक्षण इत्येके।
१३७ ईड, स्तुतौ।
१३८ जसु, हिंसायाम्।
१३९ पिडि, संघाते।
१४० रुष, रोषे।
१४१ रुट, इत्येके।
१४२ डिप, क्षेपे।

१४३ ष्टुप, समुच्छ्राये।

इत्युदात्ता उदात्तेतः।।

=१४९

अथ आकुस्माद् अष्टात्रिंशद् आत्मनेभाषाः

१४४ चित, संचेतने।

१४५ दशि, दंशनदर्शनयोः।

१४६ दस, दसि, इत्येके।

१४७ डप, डिप, संघाते।

१४८ तत्रि, कुटुम्बधारणे।

१४९ मत्रि, गुप्तपरिभाषणे।

१५० स्पश, ग्रहणसंश्लेषणयोः।

१५१ तर्ज, भर्त्स, संतर्जने।

१५२ बस्त, गन्ध, अर्दने।

१५३ विष्क, हिंसायाम्।

१५४ हिष्क, इत्येके।

१५५ निष्क, परिमाणे।

१५६ लल, ईप्सायाम्।

१५७ कूण, संकोचने।

१५८ तूण, पूरणे।

१५९ भ्रूण, आशाविशङ्कयोः।

१६० शठ, श्लाघायाम्।

१६१ यक्ष, पूजायाम्।

१६२ स्यम, वितर्के।

१६३ गुर, उद्यमने।

१६४ शम, लक्ष, आलोचने।

१६५ कुत्स, अवक्षेपणे।

१६६ त्रुट, छेदने।

१६७ कुट, इत्येके।

१६८ गल, स्रवणे।

१६९ भल, आभण्डने।

१७० कूट, अप्रदाने।

अवसादन इत्येके।

१७१ कुट्ट, प्रतापने।

१७२ वञ्चु, प्रलम्भने।

१७३ वृष, शक्तिबन्धने।

१७४ मद, तृप्तियोगे।

१७५ दिवु, परिकूजने।

१७६ गॄ, विज्ञाने।

१७७ विद, चेतनाख्याननिवासेषु।

१७८ मन, स्तम्भे।

१७९ यु, जुगुप्सायाम्।

१८० कुस्म, नाम्नो वा।

इत्युदात्ता अनुदात्तेतः।।

गॄयू तूदात्तौ।।

३८+१४९=१८७

अथ चर्चादयः कृप्यन्ताः सप्तत्रिंशत्

१८१ चर्च, अध्ययने।

१८२ बुक्क, भाषणे।

१८३ शब्द, उपसर्गादाविष्कारे च।

१८४ कण, निमीलने।
१८५ जभि, नाशने।
१८६ षूद, क्षरणे।
१८७ जसु, ताडने।
१८८ पश, बन्धने।
१८९ अम, रोगे।
१९० चट, स्फुट, भेदने।
१९१ घट, संघाते।
१९२ हन्त्यर्थाश्च।
१९३ दिवु, मर्दने।
१९४ अर्ज, प्रतियत्ने।
१९५ घुषिर्, विशब्दने।
१९६ आङः क्रन्द, सातत्ये।
१९७ लस, शिल्पयोगे।
१९८ तसि, भूष, अलङ्कारे।
१९९ अर्ह, पूजायाम्।
२०० ज्ञा, नियोगे।
२०१ भज, विश्राणने।
२०२ शृधु, प्रसहने।
२०३ यत, निकारोपस्कारयोः।
२०४ कल, गल, आस्वादने।
२०५ रघ, इत्येके।
२०६ रग, इत्यन्ये।
२०७ अञ्चु, विशेषणे।
२०८ लिगि, चित्रीकरणे।
२०९ मुद, संसर्गे।
२१० त्रस, धारणग्रहणवारणेषु।
२११ उध्रस, उञ्छे।
२१२ मुच, प्रमोचनमोदनयोः।
२१३ वस, स्नेहच्छेदापहरणेषु।
२१४ चर, संशये।
२१५ च्यु, हसने।
सहन इत्येके।
२१६ च्युस, इत्येके।
२१७ भुवो, अवकल्कने।
२१८ कृपेश्च।

३७+१८७=२२४

अथ स्वदन्ताश्चतुः पञ्चाशत्

२१९ आस्वदः सकर्मकात्।
२२० ग्रस, ग्रहणे।
२२१ पुष, धारणे।
२२२ दल, विदारणे।
२२३ पट, पुट, लुट, तुजि, मिजि, पिजि, लुजि, भजि, लघि, त्रसि, पिसि, कुसि, दशि, कुशि, घट, घटि, वृहि, वर्ह, वल्ह, गुप, धूप, विछ, चीव, पुथ, लोकृ, लोचृ, णद, कुप, तर्क, वृतु, वृधु, भाषार्थाः।
२२४ रुट, लजि, अजि, दसि, भृशि, रुशि, शीक, नट, पुटि, जिवि, रघि, लघि, अहि, रहि, महि च।
२२५ लडि, तुड, नल, च।

२२६ पूरी, आप्यायने।
२२७ रुज, हिंसायाम्।
२२८ ष्वद, आस्वादने।
२२९ स्वाद, इत्येके।

५४+२२४=२७८

अथाधृषीयाः सप्तचत्वारिंशत्

२३० आधृषाद्वा।
२३१ युज, पृच, संयमने।
२३२ अर्च, पूजायाम्।
२३३ षह, मर्षणे।
२३४ ईर, क्षेपे।
२३५ ली, द्रवीकरणे।
२३६ वृजी, वर्जने।
२३७ वृञ्, आवरणे।
२३८ जॄ, वयोहानौ।
२३९ ज्रि, च।
२४० रिच, वियोजनसंपर्चनयोः।
२४१ शिष, असर्वोपयोगे।
२४२ तप, दाहे।
२४३ तृप, तृप्तौ।
२४४ छृदी, सन्दीपने।
२४५ चृप, छृप, तृप, दृप, सन्दीपन इत्येके।
२४६ दृभी, भये।
२४७ दृभ, सन्दर्भे।
२४८ छद, संवरणे।
२४९ श्रथ, मोक्षणे। हिंसायामित्येके।
२५० मी, गतौ।
२५१ ग्रन्थ, बन्धने।
२५२ क्रथ, हिंसायाम्। स्वरितेदित्येके।।
२५३ शीक, आमर्षणे।
२५४ चीक, च।
२५५ अर्द, हिंसायाम्। स्वरितेत्।।
२५६ हिसि, हिंसायाम्।
२५७ अर्ह, पूजायाम्।
२५८ आङः षद, पद्यर्थे।
२५९ शुन्ध, शौचकर्मणि।
२६० छद, अपवारणे। स्वरितेत्।।
२६१ जुष, परितर्कणे।
२६२ धूञ्, कम्पने।
२६३ प्रीञ्, तर्पणे।
२६४ श्रन्थ, ग्रन्थ, सन्दर्भे।
२६५ आप्लृ, लम्भने। स्वरितेदित्येके।।
२६६ तनु, श्रद्धोपकरणयोः। उपसर्गाच्च दैर्घ्ये।
२६७ चन, श्रद्धोपहननयोरित्येके।
२६८ वद, सन्देशवचने। स्वरितेत्।।

२६९ वच, परिभाषणे।
२७० मान, पूजायाम्।
२७१ भू, प्राप्तावात्मनेपदी।
२७२ गर्ह, विनिन्दने।
२७३ मार्ग, अन्वेषणे।
२७४ कठि, शोके।
२७५ मृजू, शौचालंकारयोः।
२७६ मृष, तितिक्षायाम्।
स्वरितेत्।।
२७७ धृष, प्रसहने।
इत्याधृषीयाः।।
४७+२७८=३२५

अथागणान्ताः अदन्ताः
पञ्चाशीतिः

२७८ अथादन्ताः।
२७९ कथ, वाक्यप्रबन्धे।
२८० वर, ईप्सायाम्।
२८१ गण, संख्याने।
२८२ शठ, श्वठ, सम्यगवभाषणे।
२८३ पट, वट, ग्रन्थे।
२८४ रह, त्यागे।
२८५ स्तन, गदी, देवशब्दे।
२८६ पत, गतौ वा।
२८७ पष, अनुपसर्गात्।
२८८ स्वर, आक्षेपे।
२८९ रच, प्रतियत्ने।
२९० कल, गतौ संख्याने च।
२९१ चह, परिकल्कने।
२९२ मह, पूजायाम्।
२९३ सार, कृप, श्रथ, दौर्बल्ये।
२९४ स्पृह, ईप्सायाम्।
२९५ भाम, क्रोधे।
२९६ सूच, पैशुन्ये।
२९७ खेट, भक्षणे।
२९८ खेड, इत्येके।
२९९ खोट, इत्यन्ये।
३०० क्षोट, क्षेपे।
३०१ गोम, उपलेपने।
३०२ कुमार, क्रीडायाम्।
३०३ शील, उपधारणे।
३०४ साम, सान्त्वप्रयोगे।
३०५ वेल, कालोपदेशे।
काल पृथग्धातुरित्येके।
३०६ पल्पूल, लवनपवनयोः।
३०७ वात, सुखसेवनयोः।
गतिसुखसेवनेष्वित्येके।
३०८ गवेष, मार्गणे।
३०९ वास, उपसेवायाम्।
३१० निवास, आच्छादने।
३११ भाज, पृथक्कर्मणि।
३१२ सभाज, प्रीतिदर्शनयोः।
प्रीतिसेवनयोरित्येके।
३१३ ऊन, परिहाणे।

३१४ ध्वन, शब्दे।
३१५ कूट, परितापे।
परिदाह इत्यन्ये।
३१६ संकेत, ग्राम, कुण, गुण, चामन्त्रणे।
३१७ कूण, संकोचने।
३१८ स्तेन, चौर्ये।
३१९ आगर्वादात्मनेपदिनः।
३२० पद, गतौ।
३२१ गृह, ग्रहणे।
३२२ मृग, अन्वेषणे।
३२३ कुह, विस्मापने।
३२४ शूर, वीर, विक्रान्तौ।
३२५ स्थूल, परिबृंहणे।
३२६ अर्थ, उपयाच्ञायाम्।
३२७ सत्र, सन्तानक्रियायाम्।
३२८ गर्व, माने।
इत्यागर्वीयाः।।
३२९ सूत्र, वेष्टने।
विमोचन इत्यन्ये।
३३० मूत्र, प्रस्रवणे।
३३१ रूक्ष, पारुष्ये।
३३२ पार, तीर, कर्मसमाप्तौ।
३३३ पुट, संसर्गे।
३३४ धेक, दर्शन इत्येके।
३३५ कत्र, शैथिल्ये।
३३६ कर्त, इत्यप्येके।
३३७ प्रातिपदिकाद्धात्वर्थे बहुल-मिष्ठवच्च।
३३८ तत्करोति।
३३९ तदाचष्टे।
३४० तेनातिक्रामति।
३४१ धातुरूपं च।
३४२ कर्तृकरणाद्धात्वर्थे।
३४३ वष्क, दर्शने।
३४४ चित्र, चित्रीकरणे।
कदाचिद्दर्शने।
३४५ अंस, समाघाते।
३४६ वट, विभाजने।
३४७ लज, प्रकाशने।
३४८ वटि, लजि, इत्येके।[१]
३४९ मिश्र, सम्पर्के।
३५० सङ्ग्राम, युद्धे।
अयमनुदात्तेत्।।
३५१ स्तोम, श्लाघायाम्।
३५२ छिद्र, कर्णभेदने।
करणभेदने इत्येके।
कर्ण धात्वन्तरमित्येके।
३५३ अन्ध, दृष्ट्युपघाते।
उपसंहार इत्यन्ये।

१. वटस्थाने वटि लजस्थाने च ललि इत्यर्थः।

३५४ दण्ड, दण्डनिपातने।
३५५ अङ्क, पदे लक्षणे च।
३५६ अङ्ग च।
३५७ सुख, दुःख, तत्क्रियायाम्।
३५८ रस, आस्वादनस्नेहनयोः।
३५९ व्यय, वित्तसमुत्सर्गे।
३६० रूप, रूपक्रियायाम्।
३६१ छेद, द्वैधीकरणे।
३६२ छद, अपवारण इत्येके।
३६३ लाभ, प्रेरणे।
३६४ व्रण, गात्रविचूर्णने।
३६५ वर्ण, वर्णक्रियाविस्तारगुण-
वचनेषु।
३६६ बहुलमेतन्निदर्शनम्।
३६७ णिङङ्गान्निरसने।
३६८ श्वेताश्वाश्वतरगालोडिता-
ह्वरकाणामश्वतरेतकलोपश्च।
३६९ पुच्छादिषु, धात्वर्थ इत्येव
सिद्धम्।।

८५+३२५=४१०

चुरादिगणस्था धातवः	४१०
प्राक्तना धातवः	१५५७
सम्मेल्य धातवः	**१९६७**

इति चुरादयः।।

अथ कण्ड्वादयः

१ कण्डूञ्, गात्रविघर्षणे।

२ मन्तु, अपराधे।

३ वल्गु, पूजामाधुर्ययोः।

४ असु, उपतापे।

५ असू, असूञ्, इत्येके।

६ लेट्, लोट्, पूर्वभावे स्वप्ने च।

७ लेला, दीप्तौ।

८ इरस्, इरज्, इरञ्, ईर्ष्यायाम्।

९ उषस्, प्रभातभावे।

१० वेद, धौर्त्ये स्वप्ने च।

११ मेधा, आशुग्रहणे।

१२ कुषुभ, क्षेपे।

१३ मगध, परिवेष्टने। नीचदास्य इत्यन्ये।

१४ तन्तस्, पम्पस्, दुःखे।

१५ सुख, दुःख, तत्क्रियायाम्।

१६ सपर, पूजायाम्।

१७ अरर आराकर्मणि।

१८ भिषज्, चिकित्सायाम्।

१९ भिष्णज्, उपसेवायाम्।

२० इषुध, शरधारणे।

२१ चरण, वरण, गतौ।

२२ चुरण, चौर्ये।

२३ तुरण, त्वरायाम्।

२४ भुरण, धारणपोषणयोः।

२५ गद्गद, वाक्स्खलने।

२६ एला, केला, खेला, विलासे।

२७ इला, इत्यन्ये।

२८ खेला, स्खलने च। अदन्तोऽयमित्येके।

२९ लिट्, अल्पकुत्सनयोः।

३० लाट्, जीवने।

३१ हृणीङ्, रोषणे लज्जायाञ्च।

३२ महीङ्, पूजायाम्।

३३ रेखा, श्लाघासादनयोः।

३४ दुवस्, परितापपरिचरणयोः।

३५ तिरस्, अन्तर्द्धौ।

३६ अगद, नीरोगत्वे।

३७ उरस्, बलार्थे।

३८ तरण, गतौ।

३९	पयस्, प्रसृतौ।	
४०	सम्भूयस्, प्रभूतभावे।	
४१	अम्बर, सम्बर, संभरणे।	
	आकृतिगणोऽयम्।।	
	=४७	

कण्ड्वादिगणस्था धातवः	४७
प्राक्तना धातवः	१९६७
सम्मेल्य धातवः	**२०१४**

इति धातुपाठे कण्ड्वादिगणः समाप्तः।।

इति श्रीयुतदयानन्दसरस्वतीस्वामिनाऽकारादिक्रम-
सूचीपत्रेण सह धातुपाठो यन्त्रयितः।
पौषवदि १० गुरुवारे
संवत् १९३९।।

धातुपाठ-सूचीपत्रम्

धातु,	गणादि	पृष्ठ	कालम	धातु,	गणादि	पृष्ठ	कालम
इषुध	क०प०से०	५६	२	उछी	तु०प०से०	३६	२
	ई			उज्झ	तु०प०से०	३६	२
ईक्ष	भ्वा०आ०से०	१३	२	उठ	भ्वा०प०से०	८	२
ईखि	भ्वा०प०से०	५	२	उठ	भ्वा०आ०से०	१५	२
ईङ्	दि०आ०अ०	३१	१	उध्रस	क्र्या०प०से०	४५	२
ईज	भ्वा०आ०से०	६	१	उध्रस	चु०उ०से०	५१	२
ईड	अ०आ०से०	२४	२	उन्दी	रु०प०से०	४१	२
ईड	चु०प०से०	४९	२	उब्ज	तु०प०से०	३६	२
ईर	अ०आ०से०	२४	२	उभ	तु०प०से०	३७	१
ईर	चु०उ०से०	५२	१	उम्भ	तु०प०से०	३७	१
ईर्क्ष्य	भ्वा०प०से०	११	२	उरस्	क०प०से०	५६	२
ईर्ष्य	भ्वा०प०से०	११	२	उर्द	भ्वा०आ०से०	३	२
ईश	अ०आ०से०	२४	२	उर्वी	भ्वा०प०से०	१२	२
ईष	भ्वा०आ०से०	१३	२	उलडि	चु०प०से०	४७	१
ईष	भ्वा०प०से०	१४	२	उष	भ्वा०प०से०	१४	२
ईह	भ्वा०आ०से०	१३	२	उषस्	क०प०से	५६	१
	उ			उहिर्	भ्वा०प०से०	१५	२
उक्ष	भ्वा०प०से०	१४	१		**ऊ**		
उख	भ्वा०प०से०	५	१	ऊठ	भ्वा०प०से०	८	२
उखि	भ्वा०प०से०	५	१	ऊन	चु०उ०से०	५३	२
उङ्	भ्वा०आ०से०	२१	१	ऊयी	भ्वा०आ०से०	११	१
उच	दि०प०से०	३३	१	ऊर्ज	चु०प०से०	४७	१
उछि	भ्वा०प०से०	६	२	ऊर्णुञ्	अ०उ०से०	२५	१
उछि	तु०प०से०	३६	२	ऊष	भ्वा०प०से०	१४	२
उछी	भ्वा०प०से०	६	२	ऊह	भ्वा०आ०से०	१४	१

धातु,	गणादि	पृष्ठ	कालम	धातु,	गणादि	पृष्ठ	कालम
कॄ	क्र्या०प०से०	४४	२	क्रुध	दि०प०अ०	३२	१
कॄञ्	क्र्या०उ०से०	४४	१	क्रुश	भ्वा०प०अ०	१८	२
कॄत	चु०प०से०	४९	२	क्लथ	भ्वा०प०से०	१७	१
केपृ	भ्वा०आ०से०	९	२	क्लद	भ्वा०आ०से०	१६	२
केला	क०प०से०	५६	२	क्लदि	भ्वा०प०से०	४	२
केलृ	भ्वा०प०से०	१२	१	क्लदि	भ्वा०आ०से०	१६	२
केवृ	भ्वा०आ०से०	११	२	क्लप	चु०प०से०	४९	२
कै	भ्वा०प०अ०	२०	१	क्लमु	दि०प०से०	३२	२
क्नसु	दि०प०से०	३०	१	क्लिदि	भ्वा०आ०से०	३	२
क्नूञ्	क्र्या०उ०से०	४४	१	क्लिदि	भ्वा०प०से०	४	२
क्नूयी	भ्वा०आ०से०	११	१	क्लिदू	दि०प०से०	३३	२
क्मर	भ्वा०प०से०	१२	२	क्लिश	दि०आ०से०	३१	२
क्रथ	भ्वा०प०से०	१७	१	क्लिशू	क्र्या०प०से०	४५	२
क्रथ	चु०उ०से०	५२	२	क्लीबृ	भ्वा०आ०से०	९	२
क्रद	भ्वा०आ०से०	१६	२	क्लुङ्	भ्वा०आ०अ०	२१	१
क्रदि	भ्वा०प०से०	४	२	क्लेश	भ्वा०आ०से०	१३	२
क्रदि	भ्वा०आ०से०	१६	१	क्वण	भ्वा०प०से०	१०	२
क्रन्द	चु०उ०से०	५१	१	क्वथे	भ्वा०प०से०	१८	१
क्रप	भ्वा०आ०से०	१६	१	क्षजि	भ्वा०आ०से०	१६	१
क्रमु	भ्वा०प०से०	११	१	क्षजि	चु०प०से०	४८	२
क्रीञ्	क्र्या०उ०अ०	४४	१	क्षणु	त०उ०से०	४३	१
क्रीडृ	भ्वा०प०से०	९	१	क्षपि	चु०प०से०	४८	१
क्रुङ्	भ्वा०आ०अ०	२१	१	क्षमूष्	भ्वा०आ०से०	१०	२
क्रुञ्च	भ्वा०प०से०	६	१	क्षमूष्	दि०प०से०	३२	२
क्रुड	तु०प०से०	३८	२	क्षर	भ्वा०प०से०	१८	१

धातु,	गणादि	पृष्ठ	कालम	धातु,	गणादि	पृष्ठ	कालम
चुट	चु०प०से०	४८	२	च्युस	चु०उ०से०	५१	२
चुटि	चु०प०से०	४९	२		**छ**		
चुट्ट	चु०प०से०	४७	२	छद	चु०उ०से०	५२	१
चुड	तु०प०से०	३८	२	छद	चु०उ०से०	५२	२
चुडि	भ्वा०प०से०	८	२	छद	चु०उ०से०	५५	१
चुड्ड	भ्वा०प०से०	९	१	छदि	चु०प०से०	४८	१
चुद	चु०प०से०	४८	१	छदिर्	भ्वा०प०से०	१७	१
चुप	भ्वा०प०से०	१०	१	छमु	भ्वा०प०से०	११	१
चुबि	भ्वा०प०से०	१०	१	छर्द	चु०प०से०	४८	१
चुबि	चु०प०से०	४९	१	छष	भ्वा०उ०से०	१९	२
चुर	चु०प०से०	४७	१	छिदिर्	रु०उ०अ०	४१	१
चुरण	क०प०से०	५६	२	छिद्र	चु०उ०से०	५४	२
चुल	चु०प०से०	४८	२	छुट	तु०प०से०	३८	१
चुल्ल	भ्वा०प०से०	१२	१	छुड	तु०प०से०	३८	१
चूरी	दि०आ०से०	३१	१	छुप	तु०प०अ०	३९	२
चूर्ण	चु०प०से०	४७	२	छुर	तु०प०से०	३८	१
चूर्ण	चु०प०से०	४९	१	छृदिर्	रु०उ०से०	४१	१
चूष	भ्वा०प०से०	१४	२	छृदी	चु०उ०से०	५२	१
चृती	तु०प०से०	३७	१	छृप	चु०उ०से०	५२	१
चृप	चु०उ०से०	५२	१	छेद	चु०उ०से०	५५	१
चेलृ	भ्वा०प०से०	१२	१	छो	दि०प०अ०	३१	१
चेष्ट	भ्वा०आ०से०	७	१		**ज**		
च्यु	चु०उ०से०	५१	२	जक्ष	अ०प०से०	२६	२
च्युङ्	भ्वा०आ०अ०	२१	१	जज	भ्वा०प०से०	७	१
च्युतिर्	भ्वा०प०से०	४	१	जजि	भ्वा०प०से०	७	१

धातु,	गणादि	पृष्ठ	कालम	धातु,	गणादि	पृष्ठ	कालम
जट	भ्वा०प०से०	८	१	जीव	भ्वा०प०से०	१२	२
जन	जु०प०से०	२९	२	जुगि	भ्वा०प०से०	५	२
जनी	दि०आ०से०	३१	१	जुड	तु०प०से०	३७	१
जप	भ्वा०प०से०	१०	१	जुड	तु०प०से०	३८	१
जभि	चु०उ०से०	५१	१	जुड	चु०प०से०	४९	१
जभी	भ्वा०आ०से०	९	२	जुतृ	भ्वा०आ०से०	३	२
जमु	भ्वा०प०से०	११	१	जुन	तु०प०से०	३७	१
जर्ज	भ्वा०प०से०	१५	१	जुष	चु०उ०से०	५२	२
जर्ज	तु०प०से०	३६	२	जुषी	तु०आ०से०	३६	१
जल	भ्वा०प०से०	१८	१	जूरी	दि०आ०से०	३१	२
जल	चु०प०से०	४७	१	जूष	भ्वा०प०से०	१४	२
जल्प	भ्वा०प०से०	१०	१	जृभि	भ्वा०आ०से०	९	२
जष	भ्वा०प०से०	१४	२	जॄ	क्र्या०प०से०	४४	२
जसि	चु०प०से०	४९	२	जॄ	चु०उ०से०	५२	१
जसु	दि०प०से०	३३	१	जॄष्	दि०प०से०	३०	२
जसु	चु०प०से०	४९	२	जेषृ	भ्वा०आ०से०	१३	२
जसु	चु०उ०से०	५१	१	जेहृ	भ्वा०आ०से०	१४	१
जागृ	अ०प०से०	२६	२	जै	भ्वा०प०अ०	२०	१
जि	भ्वा०प०अ०	१२	२	ज्ञप	चु०प०से०	४८	२
जि	भ्वा०प०अ०	२०	२	ज्ञा	क्र्या०प०अ०	४५	१
जिमु	भ्वा०प०से०	११	१	ज्ञा	चु०उ०से०	५१	१
जिरि	स्वा०प०से०	३५	१	ज्या	क्र्या०प०अ०	४५	१
जिवि	भ्वा०प०से०	१३	१	ज्युङ्	भ्वा०आ०अ०	२१	१
जिवि	चु०उ०से०	५१	२	ज्रि	भ्वा०प०अ०	२०	२
जिषु	भ्वा०प०से०	१५	१	ज्रि	चु०उ०से०	५२	१

धातु,	गणादि	पृष्ठ	कालम	धातु,	गणादि	पृष्ठ	कालम
तिरस्	क०प०से०	५६	२	तुफ	तु०प०से०	३७	१
तिल	भ्वा०प०से०	१२	१	तुबि	भ्वा०प०से०	१०	१
तिल	तु०प०से०	३७	२	तुबि	चु०प०से०	४९	२
तिल	चु०प०से०	४८	२	तुभ	भ्वा०आ०से०	१५	२
तिल्ल	भ्वा०प०से०	१२	१	तुभ	दि०प०से०	३३	२
तीकृ	भ्वा०आ०से०	५	१	तुभ	क्र्या०प०से०	४५	२
तीम	दि०प०से०	३०	१	तुम्प	भ्वा०प०से०	१०	१
तीर	चु०उ०से०	५४	१	तुम्प	तु०प०से०	३७	१
तीव	भ्वा०प०से०	१२	२	तुम्फ	भ्वा०प०से०	१०	१
सौत्रः तु	अ०प०अ०	२५	२	तुम्फ	तु०प०से०	३७	१
तुज	भ्वा०प०से०	७	१	तुर	जु०प०से०	२९	२
तुज	चु०प०से०	४७	२	तुरण	क०प०से०	५६	२
तुजि	भ्वा०प०से०	७	१	तुर्वी	भ्वा०प०से०	१२	२
तुजि	चु०प०से०	४७	२	तुल	चु०प०से०	४८	२
तुजि	चु०उ०से०	५१	२	तुष	दि०प०अ०	३२	१
तुट	तु०प०से०	३८	१	तुस	भ्वा०प०से०	१५	१
तुड	तु०प०से०	३८	१	तुहिर्	भ्वा०प०से०	१५	२
तुड	चु०प०से०	५१	२	तूडृ	भ्वा०प०से०	९	१
तुडि	भ्वा०आ०से०	७	२	तूण	चु०आ०से०	५०	१
तुडृ	भ्वा०प०से०	९	१	तूरी	दि०आ०से०	३१	१
तुण	तु०प०से०	३७	१	तूल	भ्वा०प०से०	१२	१
तुद	तु०उ०अ०	३६	१	तूष	भ्वा०प०से०	१४	२
तुप	भ्वा०प०से०	१०	१	तृंहू	तु०प०से०	३७	२
तुप	तु०प०से०	३७	१	तृक्ष	तु०प०से०	१४	२
तुफ	भ्वा०प०से०	१०	१	तृणु	तना०उ०से०	४३	१

धातु,	गणादि	पृष्ठ	कालम	धातु,	गणादि	पृष्ठ	कालम
तृदिर्	रु०उ०से०	४१	१	त्रुट	चु०आ०से०	५०	२
तृप	दि०प०अ०	३२	२	त्रुप	भ्वा०प०से०	१०	१
तृप	स्वा०प०से०	३४	२	त्रुफ	भ्वा०प०से०	१०	१
तृप	तु०प०से०	३७	१	त्रुम्प	भ्वा०प०से०	१०	१
तृप	चु०प०से०	५२	१	त्रुम्फ	भ्वा०प०से०	१०	१
तृफ	तु०प०से०	३७	१	त्रैङ्	भ्वा०आ०अ०	२१	१
तृम्प	तु०प०से०	३७	१	त्रौकृ	भ्वा०आ०से०	५	१
तृम्फ	तु०प०से०	३७	१	त्वक्षू	भ्वा०प०से०	१४	१
तृष	दि०प०से०	३३	१	त्वगि	भ्वा०प०से०	५	२
तृह	रु०प०से०	४१	२	त्वच	तु०प०से०	३६	२
तृहू	तु०प०से०	३७	२	त्वञ्चु	भ्वा०प०से०	६	१
तॄ	भ्वा०प०से०	२१	१	त्वरा	भ्वा०आ०से०	१६	२
तेज	भ्वा०प०से०	६	२	त्विष	भ्वा०उ०अ०	२२	२
तेपृ	भ्वा०आ०से०	९	१	त्सर	भ्वा०प०से०	१२	२
तेवृ	भ्वा०आ०से०	११	२		**थ**		
त्यज	भ्वा०प०अ०	२२	१	थिपृ	भ्वा०आ०से०	९	१
त्रकि	भ्वा०आ०से०	५	१	थुड	तु०प०से०	३८	१
त्रख	भ्वा०प०से०	५	२	थुर्वी	भ्वा०प०से०	१२	२
त्रखि	भ्वा०प०से०	५	२	थेपृ	भ्वा०आ०से०	९	१
त्रदि	भ्वा०प०से०	४	२		**द**		
त्रपूष्	भ्वा०आ०से०	९	२	दंश	भ्वा०प०अ०	२२	१
त्रस	चु०उ०से०	५१	१	दक्ष	भ्वा०आ०से०	१३	२
त्रसि	चु०उ०से०	५१	२	दक्ष	भ्वा०आ०से०	१६	१
त्रसी	दि०प०से०	३०	१	दघ	स्वा०प०से०	३५	१
त्रुट	तु०प०से०	३८	१	दण्ड	चु०उ०से०	५५	१

धातु,	गणादि	पृष्ठ	कालम	धातु,	गणादि	पृष्ठ	कालम
दद	भ्वा०आ०से०	३	२	दिवु	चु०उ०से०	५ १	१
दध	भ्वा०आ०से०	३	१	दिश	तु०उ०अ०	३ ६	१
दमु	दि०प०से०	३ २	२	दिह	अ०उ०अ०	२ ४	१
दम्भु	स्वा०प०से०	३ ४	२	दीक्ष	भ्वा०आ०से०	१ ३	२
दय	भ्वा०आ०से०	१ १	१	दीङ्	दि०आ०अ०	३ ०	२
दरिद्रा	अ०प०से०	२ ६	२	दीधीङ्	अ०आ०से०	२ ६	२
दल	भ्वा०प०से०	१ २	२	दीपी	दि०आ०से०	३ १	१
दल	चु०उ०से०	५ १	२	दु	भ्वा०प०अ०	२ ०	२
दशि	चु०आ०से०	५ ०	१	दु	स्वा०प०अ०	३ ४	१
दशि	चु०आ०से०	५ १	२	दु:ख	चु०उ०से०	५ ५	१
दस	चु०आ०से०	५ ०	१	दु:ख	क०प०से०	५ ६	१
दसि	चु०आ०से०	५ ०	१	दुर्वी	भ्वा०प०से०	१ २	२
दसि	चु०उ०से०	५ १	२	दुल	चु०प०से०	४ ८	२
दसु	दि०प०से०	३ ३	१	दुवस्	क०प०से०	५ ६	२
दह	भ्वा०प०अ०	२ २	१	दुष	दि०प०अ०	३ २	१
दाञ्	जु०उ०अ०	२ ८	२	दुह	अ०उ०अ०	२ ४	१
दाण्	भ्वा०प०अ०	२ ०	२	दुहिर्	भ्वा०प०से०	१ ५	२
दान	भ्वा०उ०से०	२ २	१	दूङ्	दि०आ०से०	३ ०	२
दाप्	अ०प०अ०	२ ६	१	दृ	स्वा०प०से०	३ ५	१
दाशृ	भ्वा०उ०से०	१ ९	१	दृङ्	तु०आ०अ०	३ ९	१
दाशृ	स्वा०प०से०	३ ५	१	दृप	दि०प०अ०	३ २	२
दासृ	भ्वा०उ०से०	१ ९	२	दृप	तु०प०से०	३ ७	१
दिवि	भ्वा०प०से०	१ ३	१	दृप	चु०उ०से०	५ २	१
दिवु	दि०प०से०	३ ०	१	दृफ	तु०प०से०	३ ७	१
दिवु	चु०आ०से०	५ ०	२	दृभ	चु०उ०से०	५ २	१

धातु,	गणादि	पृष्ठ	कालम	धातु,	गणादि	पृष्ठ	कालम
यम	भ्वा०प०अ०	२१	२	रगे	भ्वा०प०से०	१६	२
यम	चु०प०से०	४८	२	रघ	चु०उ०से०	५१	१
यसु	दि०प०से०	३३	१	रघि	भ्वा०आ०से०	५	१
या	अ०प०अ०	२५	२	रघि	चु०उ०से०	५१	२
याचृ	भ्वा०उ०से०	१९	१	रच	चु०उ०से०	५३	१
यु	अ०प०से०	२५	१	रञ्ज	भ्वा०उ०अ०	२२	२
यु	चु०आ०से०	५०	२	रञ्ज	दि०उ०अ०	३१	२
युगि	भ्वा०प०से०	५	२	रट	भ्वा०प०से०	८	१
युछ	भ्वा०प०से०	६	२	रठ	भ्वा०प०से०	८	२
युज	दि०आ०अ०	३२	१	रण	भ्वा०प०से०	१०	२
युज	चु०उ०से०	५२	१	रण	भ्वा०प०से०	१६	२
युजिर्	रु०उ०अ०	४१	१	रद	भ्वा०प०से०	४	१
युञ्	क्र्या०उ०अ०	४४	१	रध	दि०प०से०	३२	२
युतृ	भ्वा०आ०से०	३	२	रप	भ्वा०प०से०	१०	१
युध	दि०आ०अ०	३२	१	रफ	भ्वा०प०से०	१०	१
युप	दि०प०से०	३३	२	रफि	भ्वा०प०से०	१०	१
यूष	भ्वा०प०से०	१४	२	रबि	भ्वा०आ०से०	९	२
येषृ	भ्वा०आ०से०	१३	२	रभ	भ्वा०आ०अ०	२१	२
यौटृ	भ्वा०प०से०	८	१	रभि	भ्वा०आ०से०	९	२
	र			रमु	भ्वा०आ०अ०	१८	२
रक्ष	भ्वा०प०से०	१४	१	रय	भ्वा०आ०से०	११	१
रख	भ्वा०प०से०	५	२	रवि	भ्वा०प०से०	१३	१
रखि	भ्वा०प०से०	५	२	रस	भ्वा०प०से०	१५	१
रग	चु०प०से०	५१	१	रस	चु०उ०से०	५५	१
रगि	भ्वा०प०से०	५	२	रह	भ्वा०प०से०	१५	१

धातु,	गणादि	पृष्ठ	कालम	धातु,	गणादि	पृष्ठ	कालम
वल्ह	चु०उ०से०	५१	२	विद	अ०प०से०	२६	१
वश	अ०प०से०	२७	१	विद	दि०आ०अ०	३२	१
वष	भ्वा०प०से०	१४	२	विद	रु०आ०अ०	४१	२
वष्क	चु०उ०से०	५४	२	विद	चु०आ०से०	५०	२
वस	भ्वा०प०अ०	२२	२	विद्लृ	तु०उ०से०	४०	१
वस	अ०आ०से०	२४	२	विध	तु०प०से०	३७	१
वस	चु०उ०से०	५१	२	विल	तु०प०से०	३७	२
वसु	दि०प०से०	३३	१	विल	चु०प०से०	४८	२
वस्क	भ्वा०आ०से०	५	१	विश	तु०प०अ०	३९	२
वह	भ्वा०उ०अ०	२२	२	विष	क्र्या०प०अ०	४५	२
वा	अ०प०अ०	२६	१	विषु	भ्वा०प०से०	१५	१
वाक्षि	भ्वा०प०से०	१४	२	विष्लृ	जु०उ०अ०	२९	१
वाछि	भ्वा०प०से०	६	२	विष्क	चु०आ०से०	५०	१
वाडृ	भ्वा०आ०से०	७	२	वी	अ०प०अ०	२५	२
वात	चु०उ०अ०	५३	२	वीर	चु०आ०से०	५४	१
वावृतु	दि०आ०से०	३१	२	वृ	भ्वा०प०अ०	२०	२
वाश्टृ	दि०आ०से०	३१	२	वृक	भ्वा०आ०से०	४	२
वास	चु०उ०से०	५३	२	वृक्ष	भ्वा०आ०से०	१३	२
विचिर्	रु०उ०अ०	४१	१	वृङ्	क्र्या०आ०से०	४५	१
विछ	तु०प०से०	३९	२	वृजी	अ०आ०से०	२४	२
विछ	चु०उ०से०	५१	२	वृजी	रु०प०से०	४२	१
विजिर्	जु०उ०अ०	२८	२	वृजी	चु०उ०से०	५२	१
विजी	तु०आ०से०	३६	१	वृञ्	स्वा०उ०से०	३४	१
विजी	रु०प०से०	४२	१	वृञ्	चु०उ०से०	५२	१
विट	भ्वा०प०से०	८	१	वृण	तु०प०से०	३७	१
विथृ	भ्वा०आ०से०	३	२	वृतु	भ्वा०आ०से०	१६	१

धातु,	गणादि	पृष्ठ	कालम	धातु,	गणादि	पृष्ठ	कालम
वृतु	चु०उ०से०	५१	२	व्यय	भ्वा०उ०से०	१९	१
वृधु	भ्वा०आ०से०	१६	१	व्यय	चु०उ०से०	५५	१
वृधु	चु०उ०से०	५१	२	व्युष	दि०प०से०	३०	१
वृश	दि०प०से०	३३	१	व्युष	दि०प०से०	३३	१
वृष	चु०आ०से०	५०	२	व्येञ्	भ्वा०उ०अ०	२३	१
वृषु	भ्वा०प०से०	१५	१	व्रज	भ्वा०प०से०	७	१
वृहि	चु०उ०से०	५१	२	व्रज	चु०प०से०	४८	२
वृहू	तु०प०से०	३७	२	व्रण	भ्वा०प०से०	१०	२
वॄ	क्र्या०प०से०	४४	२	व्रण	चु०उ०से०	५५	१
वॄञ्	क्र्या०उ०से०	४४	१	व्रश्चू	तु०प०से०	३६	२
वेञ्	भ्वा०उ०अ०	२२	२	व्री	क्र्या०प०अ०	४५	१
वेणृ	भ्वा०उ०से०	१९	१	व्रीङ्	दि०आ०अ०	३०	२
वेथृ	भ्वा०आ०से०	३	२	व्रीड	दि०प०से०	३०	२
वेद	क०प०से०	५६	१	व्रुड	तु०प०से०	३८	२
वेनृ	भ्वा०उ०से०	१९	१	व्ली	क्र्या०प०से०	४५	१
वेपृ	भ्वा०आ०से०	९	२		**श**		
वेल	चु०उ०से०	५३	२	शंसु	भ्वा०प०से०	१५	१
वेलृ	भ्वा०प०से०	१२	१	शक	दि०प०अ०	३२	१
वेल्ल	भ्वा०प०से०	१२	१	शकि	भ्वा०आ०से०	४	२
वेवीङ्	अ०आ०से	२६	२	शक्लृ	स्वा०प०अ०	३४	२
वेष्ट	भ्वा०आ०से०	७	१	शच	भ्वा०आ०से०	५	२
वेह्ट	भ्वा०आ०से०	१४	१	शट	भ्वा०प०से०	८	१
वै	भ्वा०प०अ०	२०	१	शठ	भ्वा०प०से०	८	२
व्यच	तु०प०से०	३६	२	शठ	चु०प०से०	४७	२
व्यथ	भ्वा०आ०से०	१६	१	शठ	चु०आ०से०	५०	१
व्यध	दि०प०अ०	३२	१	शठ	चु०उ०से०	५३	१

धातु,	गणादि	पृष्ठ	कालम	धातु,	गणादि	पृष्ठ	कालम
षिञ्	क्र्या०उ०अ०	४४	१	ष्टक	भ्वा०प०से०	१६	२
षिट	भ्वा०प०से०	८	१	ष्टगे	भ्वा०प०से०	१६	२
षिधु	भ्वा०प०से०	४	१	ष्टन	भ्वा०प०से०	११	१
षिधु	दि०प०अ०	३२	२	ष्टभि	भ्वा०आ०से०	९	२
षिधू	भ्वा०प०से०	४	१	ष्टम	भ्वा०प०से०	१८	१
षिभु	भ्वा०प०से०	१०	१	ष्टिघ	स्वा०आ०से०	३४	२
षिम्भु	भ्वा०प०से०	१०	१	ष्टिपृ	भ्वा०आ०से०	९	१
षिल	तु०प०से०	३७	२	ष्टिम	दि०प०से०	३०	१
षिवु	दि०प०से०	३०	१	ष्टीम	दि०प०से०	३०	१
षु	भ्वा०प०अ०	२०	२	ष्टुच	भ्वा०आ०से०	६	१
षु	अ०प०अ०	२५	२	ष्टुञ्	अ०उ०अ०	२५	२
षुञ्	स्वा०उ०अ०	३४	१	ष्टुप	चु०प०से०	५०	१
षुट्ट	चु०प०से०	४७	२	ष्टुभ	भ्वा०आ०से०	९	२
षुर	तु०प०से०	३७	२	ष्टृक्ष	भ्वा०प०से०	१४	२
षुह	दि०प०से०	३०	२	ष्टेपृ	भ्वा०आ०से०	९	१
षू	तु०प०से०	३९	१	ष्टै	भ्वा०प०अ०	२०	१
षूङ्	अ०आ०से०	२५	१	ष्ट्यै	भ्वा०प०अ०	२०	१
षूङ्	दि०आ०से०	३०	२	ष्ठल	भ्वा०प०से०	१८	१
षूद	भ्वा०आ०से०	३	२	ष्ठा	भ्वा०प०अ०	२०	२
षूद	चु०उ०से०	५१	१	ष्ठिवु	भ्वा०प०से०	१२	२
षृभु	भ्वा०उ०से०	१०	१	ष्ठिवु	दि०प०से०	३०	१
षृम्भु	भ्वा०प०से०	१०	१	ष्णसु	दि०प०से०	३०	१
षेलृ	भ्वा०प०से०	१२	१	ष्णा	अ०प०अ०	२६	१
षेवृ	भ्वा०आ०से०	११	२	ष्णिह	दि०प०से०	३२	२
षै	भ्वा०प०अ०	२०	१	ष्णिह	चु०प०अ०	४८	१
षो	दि०प०अ०	३१	१	ष्णु	अ०प०से०	२५	१

इति धातु-सूचीपत्रम्।।